Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ

(सूरत अल्मायदा: 93)

अनुवाद : और अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो और (बुराई से)बचते रहो। और अगर तुम पीठ फेर जाओ तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल स्पष्ट संदेश पहुंचाना है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 23

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

08 जुल्कादा 1443 हिज्री कमरी, 09 अहसान 1401 हिज्री शम्सी, 09 जून 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मांगने की निंदा और इससे बचने की प्रेरणा

(1480) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुम में से कोई व्यक्ति अपनी रस्सी ले फिर सुबह को पहाड़ की तरफ़ निकल जाए और लकड़ियाँ इकट्ठी करे और उन को बेचे और खाए और सद्के भी करे। उसके लिए इससे बेहतर है कि लोगों से मांगे।

अपनी सद्का की हुई चीज़ को ख़रीदने की मनाही

(1489) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते थे कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अल्लाह तआला के रास्ते में एक घोड़ा बतौर सद्का दिया। फिर उन्हों ने उसे बिकते हुए देखा और ख़रीदना चाहा। वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इजाज़त चाही। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपने सद्के को वापस न लो।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

इन्सानी कमज़ोरी का तो कुछ ठिकाना ही नहीं है, वह एक क़दम भी ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और सहायता के बग़ैर नहीं चल सकता जब वह इस क़दर कमज़ोरियों का निशाना और मजमूआ है तो उसके लिए अमन और आफ़ियत का यही मार्ग है कि ख़ुदा तआला के साथ उसका ममला साफ़ हो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

फ़ानी-फ़िल्लाह का स्थान

ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और सहायता के बग़ैर इन्सान कुछ भी नहीं कर सकता। जब अल्लाह तआला की तरफ़ इन्सान खिंचा जाता है और ख़ुदा तआला में फ़ना हो जाता है तो इस से वे काम सादिर होते हैं, जो ख़ुदाई काम कहलाते हैं। इस पर उत्तम से उत्तम अनवार ज़ाहिर होने लगते हैं। इन्सानी कमज़ोरी का तो कुछ ठिकाना ही नहीं है। वह एक क़दम भी ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और ताईद के बग़ैर नहीं चल सकता। मैं तो यहां तक यक़ीन रखता हूँ कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से उसे मदद न मिले तो वे रफ़ा'-ए-हाजत (शौच करने) के बाद पजामे का नाला तक भी बाँधने की ताक़त नहीं रख सकता। चिकत्सकों ने एक रोग लिखा है कि इन्सान छींक के साथ ही हलाक हो जाता है। निसंदेह याद रखो कि इन्सान कमज़ोरियों का मजमूआ है और इसी लिए ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है خُلِقَ الۡاِنۡسَانُ ضَعِيۡفًا (अल् निसा : 29) इस का अपना तो कुछ भी नहीं है। सिर से पांव तक इतने अंग नहीं, जिस क़दर रोग उस को लगे होते हैं। फिर जब वह इस क़दर कमज़ोरियों का निशाना और मजमूआ है तो उसके लिए अमन और आफ़ियत का यही मार्ग है कि ख़ुदा तआला के साथ उसका मुआमला साफ़ हुआ और वह उस का सच्चा और मुख़लिस बंदा बने और इस के लिए ज़रूरी है कि वह सिदक़ को इख़्तियार करे। जस्मानी निज़ाम की बनावट भी सिदक़ ही है। जो लोग सिदक़ को छोड़ते हैं और ख़यानत कर के जरायम को रोकथाम में लाने वाले कवच को किज़्ब ख़्याल करते हैं, वे सख़्त ग़लती पर हैं।

झूठ बोलने से इन्सान का दिल काला हो जाता है

फ़ानी और आरिज़ी तौर पर शायद कोई फ़ायदा इन्सान समझ ले लेकिन फ़िल-हक़ीक़त किज़्ब झूठ बोलने से इन्सान का दिल काला हो जाता है और अंदर ही अंदर उसे एक दीमक लग जाती है। एक झूठ के लिए फिर उसे बहुत से झूठ तराशने पड़ते हैं, क्योंकि उस झूठ को सच्चाई का रंग देना होता है। अतः इसी तरह अंदर ही अंदर उसके अख़लाक़ी और रूहानी अंग नष्ट हो जाते हैं और फिर उसे यहां तक साहस और दिलेरी हो जाती है कि ख़ुदा तआला पर भी इफ़्तिरा कर लेता और ख़ुदा के मुर्सलों और मामूरों की तक़ज़ीब भी कर देता है और ख़ुदा तआला के नज़दीक वह اَظۡلَمُ ठहरता है। जैसा के ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है مَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوۡ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ (अल् ईनाम : 21) अर्थात उस शख़्स से बढ़कर कौन ज़ालिम हो सकता है जो अल्लाह तआला पर झूठ और इफ़्तिरा बाँधे या उसकी आयात की तक़ज़ीब करे। निसंदेह याद रखो कि झूठ बहुत ही बुरी

शेष पृष्ठ 12 पर

अगर इन्सान की ज़िंदगी केवल इस दुनिया तक ख़त्म हो जाती है तो मानो इस क़दर बड़ी दुनिया अल्लाह तआला ने केवल इस लिए पैदा की है कि इन्सान इस में पैदा हो, कुछ दिन खाए पिए और फिर मर जाए और यह ख़्याल बिल्कुल अक़ल के खिलाफ़ है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत हुजरात आयत नम्बर : 86 وَمَا خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصۡفَحِ الصَّفۡحَ الۡجَمِيۡلَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं : अर्थात आसमान और ज़मीन की पैदाइश पर ग़ौर तो करो क्या वे बिना उद्देश्य के नज़र आते हैं। इस कारख़ाना पर नज़र डालने से हर एक अक़लमंद समझ सकता है कि इस क़दर बड़ा निज़ाम किस उद्देश्य से है और इस से नतीजा निकाल सकता है कि साअत ज़रूर आने वाली है। साअत का शब्द क़यामत के लिए भी इस्तिमाल होता है और इस निर्धारित घड़ी के लिए भी जो अम्बिया के दुश्मनों की तबाही और उनके मानने वालों की तरक़्क़ी के लिए निर्धारित होती है। आयत का पहला हिस्सा दोनों साअतों के लिए बतौर दलील है। ज़मीन और आसमान की पैदाइश क़यामत की भी दलील है और नबियों की कामयाबी और उनके दुश्मनों की तबाही की भी।

क़यामत की इस तरह कि अगर इन्सान की ज़िंदगी केवल इस दुनिया तक ख़त्म हो जाती है तो मानो इस क़दर बड़ी दुनिया अल्लाह तआला ने केवल इस लिए पैदा की है कि इन्सान इस में पैदा हो कुछ दिन खाए पिए और फिर मर जाए और यह ख़्याल बिल्कुल ख़िलाफ़ अक़ल है। इस क़दर बड़े निज़ाम का पैदा करना एक बहुत बड़े उद्देश्य के लिए ही हो सकता है और वह ग़रज़ पूरी होती इस दुनिया में नज़र नहीं आती। अतः ज़रूर है कि इन्सान की ज़िंदगी इसी दुनयावी हयात तक ख़त्म न हो बल्कि इस निज़ाम की अज़मत के मुताबिक़ एक बड़े ज़माना तक चली जाए जिसमें वे एक ऐसे उच्च स्थान को पाले जो इस निज़ाम की अज़मत के मुताबिक़ हो।

अगर ग़ौर किया जाए तो सारा निज़ाम तो अलग रहा। अल्लाह तआला ने छोटी से छोटी चीज़ में ही ऐसे इसरार रखे हैं कि ख़त्म होने में नहीं आते। इन्सानी जिस्म को ही ले लो, उसका निज़ाम कैसा पेचीदा है। हज़ारों लाखों चिकित्सक और इल्मे तशरीह के माहिर इसकी हक़ीक़त के मालूम करने में लगे हुए हैं लेकिन अब तक इन उमूर का अनुमान नहीं कर सके जो जिस्म-ए-

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

तुम से अल्लाह तआला का पक्का वादा लिया जाता है कि तुम ज़रूर अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाओ गे

और ज़रूर नमाज़ को क़ायम करोगे और ज़रूर ज़कात अदा करोगे और इसी चीज़ पर तुम अपने बेटों और औरतों की तरफ़ से भी बैअत करोगे

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

"तुम अपने हर काम में अल्लाह से डरते रहो। ' اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ

ख़िलाफ़त-ए-ऊला में बाग़ी मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ की जाने वाली मुहिम्मात में से चंद एक का तफ़सीली वर्णन

श्रीमती साबरा बेग़म साहिबा पत्नी रफ़ीक़ अहमद बट साहिब आफ़ स्यालकोट और श्रीमती सुरय्या रशीद साहिबा पत्नी रशीद अहमद बाजवा साहिब आफ़ कैनेडा का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 06 मई 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में पिछले ख़ुतबात में मुहिम्मात भिजवाने का जो वर्णन हुआ था उनकी कुछ तफ़सील बयान करता हूँ ताकि उस वक़्त के हालात की शिद्दत का भी कुछ अनुमान हो। जैसा कि वर्णन हुआ था ग्यारह मुहिम्मात भेजी गई थीं। उनमें से पहली मुहिम की तफ़सील कुछ इस प्रकार है जो तुलेहा बिन ख़ूवीलिद, मालिक बिन नोवै, सजाह बिंत हारिस और मुसैलमा कज़्ज़ाब इत्यादि बाग़ी मुर्तद होने वाले और झूठे नबियों का अंत करने के लिए भेजी गई थी। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक झंडा हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि तुलेहा बिन ख़वयलिद के मुक़ाबले के लिए जाएं और इस से फ़ारिग़ हो कर बुतहा में मालिक बिन नुवयरा से लड़ें अगर वे लड़ाई पर डटे हों अर्थात कि अगर लड़ने पर इसरार कर रहा हों तो फिर लड़ना है। बुतहा बनू असद के इलाक़े में एक चशमा का नाम है वहां (मुक़ाबला) हुआ था। (तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 257 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1, पृष्ठ 527)

एक रिवायत में है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत साबित बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हो को अंसार का अमीर निर्धारित किया और उन्हें हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के अधीन कर के हज़रत ख़ालिद को हुक्म दिया कि वह तुलेहा और उयेनह बिन हिस्न के मुक़ाबले पर जाएं जो बनू असद के एक चशमा बुज़ाख़ह पर रहते थे। (तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 260 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुर्तद होने वाले से जंग के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के वास्ते झंडा बाँधा तो फ़रमाया मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि ख़ालिद बिन वलीद अल्लाह का बहुत ही अच्छा बंदा है और हमारा भाई है जो अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है जिसे अल्लाह तआला ने कुफ़्फ़ार और मुनाफ़क़ीन के ख़िलाफ़ उठाई है।

(अल् बिदाया वन्हाया, भाग 3 पृष्ठ 313 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2001 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को तुलेहा और उयेनह की तरफ़ भेजा। इन दोनों मुख़ालेफ़ीन का मुख़्तसर परिचय भी पेश है।

तुलेहा असदी झूठी नबुव्वत का दावा करने वालों में से एक था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवन के आख़री दौर में नमूदार हुआ। इस का नाम तुलेह बिन ख़ूवेलद बिन नौफ़ल बिन नज़ला असदी था। आमुल वफ़ूद अर्थात वफ़ूद की आमद वाले साल में, नौ हिज्री में अपनी क़ौम बनु असद के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मदीना पहुंच कर उन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलाम किया और एहसान जताते हुए कहा कि हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए हैं। हम इस बात की गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं है और आप अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह कहा कि हालाँकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारी तरफ़ किसी को नहीं भेजा और हम अपने पीछे वालों के लिए काफ़ी हैं। जब ये लोग वापस चले गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में ही तुलेहा मुर्तद होने का शिकार हुआ और नबुव्वत का दावा कर बैठा और समीरा को अपना फ़ौजी मर्कज़ बनाया। समीरा आद की क़ौम के एक शख़्स के नाम पर इस मुक़ाम का नाम रखा गया था और मदीना से मक्का की जानिब एक मंज़िल के फ़ासले पर यह वाक़्य है। इस इलाक़े के इर्द-गिर्द काले-रंग के पहाड़ हैं जिनकी वजह से इस का यह नाम रखा गया। बहरहाल उसने जो दावा किया था लोग उस के मुरीद हो गए। लोगों की गुमराही का पहला कारण यह हुआ कि वह अपनी क़ौम के साथ एक सफ़र में था, पानी ख़त्म हो गया तो लोगों को शदीद प्यास लगी। उसने लोगों से कहा कि तुम मेरे घोड़े एलाल पर सवार हो कर चंद मील जाओ वहां तुम्हें पानी मिलेगा। उन्होंने ऐसा ही किया और उन्हें पानी मिल गया। इस वजह से यह देहाती उस फ़ित्ना का शिकार हो गए। पानी की कोई जगह उसने देखी होगी पहले ही। बड़ी होशयारी से उसने उनको वहां भेजा और इस वजह से जो अनपढ़ लोग थे वे उस के फ़ित्ना का शिकार हुए। बहरहाल उस की बे-हक़ीक़त बातों में से यह भी थी कि उसने नमाज़ से सज्दों को ख़त्म कर दिया था। अर्थात नमाज़ों में सज्दे की ज़रूरत कोई नहीं और उसका यह ख्याल था कि आसमान से उस पर वह्यी आती है सुसज्जि और अलंकृत वाक्यों को बतौर वह्यी के पेश किया करता था।

तारीख़ से मालूम होता है कि ज़माना जाहिलियत में काहिन लोग सुसज्जि और अलंकृत वाक्य लोगों के सामने प्रस्तुत कर के उन पर रोब बिठाते थे। तुलेहा भी काहिन था। तुलेहा असदी के नफ़्स ने उस को धोखे में डाला। उसका मसला ज़ोर पकड़ गया। उसकी ताक़त बढ़ी और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उसके मामले की इत्तिला मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़िरार बिन अज़वर असदी को इस से क़िताल के लिए रवाना किया लेकिन ज़रार के बस की बात नहीं थी क्योंकि वक़्त के साथ साथ उस की क़ुव्वत बढ़ चुकी थी। खासतौर पर

शेष पृष्ठ 6 पर

जंग-ए-जमल के होने की वजह और इसकी हक़ीक़त

क़ुरआन और हदीस ने किसी गुस्ताख रसूल को इस दुनिया में सज़ा देने का किसी इन्सान को इख़तियार नहीं दिया

छोटे बच्चों को अज़ान देने की आज्ञा नहीं देनी चाहिए

महिलाओं के बाल कटवाने और उन बालों को कैंसर के किसी ग़ैर मुस्लिम मरीज़ को donate करने के बारे में

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त13, भाग 2)

शेष भाग

(2) क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस को हिफ़्ज़ करने का बेहतरीन तरीक़ उन्हें ध्यान से और कसरत के साथ पढ़ना है। अहादीस में आता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो की इसी किस्म की शिकायतों हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें, इन उमूर की तरफ़ तवज्जा करने और उन्हें नियमित और कसरत से पढ़ने की तलक़ीन फ़रमाई थी।

3) दुरूद शरीफ़ में तनदिही पैदा करने का भी यही तरीक़ है कि मुहब्बत और लगन के साथ उसका कसरत से विर्द किया जाए। जिस तरह हम अपने दूसरे कामों में दिलचस्पी लेते और उनकी तरफ़ तवज्जा करते हैं, यदि इन नेक कामों में भी यही मुहब्बत और दिलचस्पी पैदा करें तो इन शा अल्लाह अवश्य मक़सूद हासिल होगा।

दुरूद शरीफ़ का कसरत से विर्द निसदेह बहुत बा बरकत है और इन्सान की प्रत्येक दुआ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद के कारण ही अल्लाह तआला के हुज़ूर रसाई पाती हैं जैसा कि अहादीस में वर्णन हुआ है। यदि केवल दुरूद शरीफ़ ही पढ़ना हर इन्सान के लिए काफ़ी होता और यह चीज़ उसे बाक़ी दुआओं से मुस्तग़नी कर देती तो अलग अवसरों पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुद दुरूद शरीफ़ के अतिरिक्त अन्य दुआएं क्यों पढ़ते? और अन्य सहाबा और सहाबियात को अलग किस्म की दुआएं क्यों सिखाते? इसलिए अहादीस में बहुत सी ऐसी दुआओं का वर्णन मिलता है, जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद भी कीं और सहाबा और सहाबियात को भी सिखाई और यही तरीक़ आपके ग़ुलाम सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पवित्र जीवनी में हमें नज़र आता है। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ की के आधार पर यदि कोई व्यक्ति इस नीयत से कि दुरूद भी अल्लाह तआला के फ़ज़लों के हुसूल के लिए एक वसीला है, इस हुस्न ज़न्नी से अपनी समस्त मुनाजात आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजना ही बनाता है तो अल्लाह तआला भी उसकी इस नीयत और हुस्न ज़न्नी के अनुसार इस से व्यवहार करेगा, जैसा कि एक हदीस क़ुदसी में अल्लाह तआला फ़रमाता है أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي।

अहादीस में अलग दुरूद वर्णन हुए हैं और उलमा-ए-उम्मत में भी अलग किस्म के दुरूद रायज रहे हैं, और उन्होंने उनके अलग नाम भी रखे हुए हैं, जिनमें से कुछ तफ़सीली दुरूद हैं और कुछ संक्षिप्त हैं। अधिक बरकत का बायस और मुबारक दुरूद तो निसदेह वही है जो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भाषा मुबारक से निकला और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को सिखाया। इन उमूर में असल चीज़ तो इन्सान की नीयत, मुहब्बत और तवज्जा है कि किस तौर पर वे अल्लाह तआला के प्यार को जज़ब करना चाहता है। अतः जिस नीयत, मुहब्बत और तवज्जा से वे इन उमूर को सरअंजाम देगा अल्लाह तआला तक उस की यह नीयत और ख़ुलूस निसदेह पहुंच जाता है।

4) अहादीस से पता चलता है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुछ अहकामात सायल की नफ़सियात को सामने रखकर वर्णन फ़रमाए हैं, इसी लिए एक ही किस्म के सवाल पर आपकी तरफ़ से अलग उत्तर भी वर्णन हुए हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिस व्यक्ति में जैसी कमी महसूस की उसकी इसी के अनुसार रहनुमाई फ़रमाई। इसलिए कुछ दुआओं और अज़कार को गिन कर करने का भी अहादीस में वर्णन मिलता है। जिसमें एक हिक्मत यह भी है कि कम से कम इस क़दर तोअवश्य इन दुआओं और अज़कार को बजा लाओ।

फिर यह भी याद रखना चाहिए कि जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस अमर को ख़ूब खोल खोल कर वर्णन फ़रमाया है कि दुआओं और अज़कार को केवल तोते की तरह पढ़ने का कोई फ़ायदा नहीं बल्कि अल्लाह तआला के प्यार को पाने के लिए इन दुआओं और अज़कार में वर्णन इस्लामी तालीम के अनुसार अपनी ज़िंदगी को ढालना, उनके अनुसार अमल करना और अन्य नेकियां बजा लाना भी लाज़िमी है। सूरत अल् फ़ातिहा को कसरत से पढ़ने वाला जब तक इस सूरत में ख़ुदा की सिफ़ात में रंगीन होने की कोशिश नहीं करेगा और क़ुरआन की हिदायत صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً تَخَلَّقُوْا بِأَخْلَاقِ اللّٰهِ और हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वस्त्र नहीं पहनेगा, सिर्फ़ केवल मुख के वर्णन से वह कोई फ़ायदा नहीं उठा सकता। इलम-ए-लद्नी के हुसूल का भी यही माध्यम है क्योंकि इसी तरीक़ पर इन्सान अल्लाह तआला के फ़ज़लों और उसके प्यार को आकर्षित कर सकता है।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल के साथ लजना इमाइल्लाह हॉलैंड की virtual मुलाक़ात तिथि 22 अगस्त 2020 ई. में लजना की तरफ़ से पर्दा के सम्बन्ध में होने वाले एक सवाल का उत्तर अता फ़रमाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया :

उत्तर : यह पर्दा केवल जमात अहमदिया का आदेश नहीं है। नास्रात में भी और लजना में भी यह तर्बीयत होनी चाहिए कि पर्दा का आदेश जो है यह क़ुरआन-ए-करीम का आदेश है, अल्लाह और रसूल का आदेश है। इसलिए जमाअत ने वे काम करने हैं जो अल्लाह और रसूल ने फ़रमाए हैं ओर ये ऐसे आदेश हैं, जिनका वर्णन है, स्पष्ट आदेश हैं। क़ुरआन-ए-करीम में जो कुछ ख़ास बातें हैं, अहम, खुली खुली स्पष्ट हिदायात, अहकामात उनमें एक पर्दे का आदेश है। इसलिए हम कहते हैं। इस में यदि केवल यह होता कि किसी चीज़ से इस्तिंबात किया जाता या किसी चीज़ से समझा जाता, उसको interpret किया जाता कि इस से यह मतलब निकलता है तो फिर गुंजाइश निकल सकती थी कि लड़कियां समझें या महिलाएं समझें कि हाँ यहां पर्दे की आज्ञा है और यहां नहीं है। लेकिन जब स्पष्ट आदेश आ गया तो फिर हमने इस आदेश पर अमल करना है और करवाना है। ये बातें अच्छी तरह लड़कियों के दिमाग़ों में डाल दें तो पर्दा की तरफ़ भी तवज्जा पैदा होगी। असल चीज़ यह पैदा करें कि हया ईमान का हिस्सा है, हदीस है। जब हया पैदा हो जाएगी तो ख़ुद बख़ुद पर्दे की तरफ़ भी तवज्जा पैदा हो जाएगी। चाहे वे यूनीवर्सिटी में पढ़ने वाली लड़की है, वह अपने हया के दायरा में रहेगी, अपने लिबास का ख़्याल रखेगी और फिर पर्दा का भी ख़्याल रखेगी।

इसी मुलाक़ात में एक मैंबर लजना ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि मेम्बरात लजना के अख़बारों में लिखने के लिए कौन से कार्य किए जा सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : जो भी contemporary issues आते हैं और अख़बारों में मज़मून लिखे जाते हैं। या आप लोग महसूस करते हैं कि आजकल सोशल मीडीया पर या कहीं यह डिस्कस हो रहे हैं। उस के लिए आप सोशल मीडीया पर, लजना की वेबसाइट पर उत्तर दें ताकि awareness हो। हर एक को पता लगे कि यह उसका असल उत्तर है, असल चीज़ यह है। इसी तरह जो लिखने वाली हैं इन issues के ऊपर इस्लाम के दिफ़ा के लिए अख़बारों में लिखें कि तुम लोग कहते हो कि इस्लाम यह

शेष पृष्ठ 10 पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई. (भाग-9)

डबलिन शहर की ओर यात्रा

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

हुज़ूर अनवर ने इस बच्चे को फ़रमाया तुम्हारा रुजहान ब्यालोजी में है तो फिर डाक्टर बनो। और डाक्टर बिन कर फिर आयरलैंड में नहीं रहना। अफ़्रीक़ा जाना पड़ेगा।

अतफ़ाल की यह क्लास 12 बजकर 50 मिनट तक जारी रही। अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक समस्त बच्चों को क़लम और चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। इस बीच हुज़ूर अनवर की आज्ञा से तीन ख़ुद्दाम के एक ग्रुप ने तराना पढ़ा।

नास्रात की हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ क्लास

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार 12 बजकर 50 मिनट पर नास्रात की क्लास हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ शुरू हुई। क्लास का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो प्रिय ज़ैनब मायदा ख़ान ने की और इसका उर्दू अनुवाद प्रिय सालेहा असद ने प्रस्तुत किया। इसके बाद अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद प्रिय एमन नूनं ने प्रस्तुत किया।

इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की निमंलिखित हदीस प्रिय शानज़ा अहमद ने प्रस्तुत की

لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ۔

(बुख़ारी भाग अव्वल पुस्तक अल् ईमान)

इस हदीस का निमंलिखित उर्दू अनुवाद प्रिय फ़ारेहा शमस ने प्रस्तुत किया :

"तुम में से कोई सच्चा मोमिन नहीं बिन सकता जब तक कि वह अपने माता पिता बच्चों और समस्त लोगों से बढ़कर मुझ से प्यार न करे"

इस हदीस का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद प्रिय फ़ायज़ा मक़बूल ने प्रस्तुत किया :

इसके बाद प्रिय सबीका अहसन ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंजूम कलाम

वो पेशवा हमारा जिस से है नूर सारा
नाम उसका है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है

सूरीली आवाज़ से पढ़ कर सुनाया

इसके बाद प्रिय अफ़्शां कामरान ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निमंलिखित इक़तिबास प्रस्तुत किया। "मैं हमेशा ताज्जुब की निगह से देखता हूँ कि यह अरबी नबी जिसका नाम मोहम्मद है (हज़ार हज़ार दुरूद और सलाम उस पर) यह किस आली मर्तबा का नबी है। इसके आली मक़ाम का इंतिहा मालूम नहीं हो सकता और इस की तासीर क़ुदसी का अनुमान करना इन्सान का काम नहीं। अफ़सोस कि जैसा हक़ शनाख़्त का है इसके स्थान को शनाख़्त नहीं किया गया। वह तौहीद जो संसार से गुम हो चुकी थी वही एक पहलवान है जो पुनः उस को संसार में लाया। उसने ख़ुदा से अत्यधिक दर्जा पर मुहब्बत की और अत्यधिक दर्जा पर बनीनौ की हमदर्दी में इस की जान गुदाज़ हुई इस लिए खुदा ने जो उसके दिल के राज़ का परिचय था उस को समस्त अम्बिया और समस्त अव्वलीन और आख़रीन पर फ़ज़ीलत बख़शी और उसकी मुरादें उस की जीवन में उस को दें। वही है जो सरचश्मा प्रत्येक फ़ैज़ का है और वह व्यक्ति जो बिना इक़रार इफ़ाज़ा इसके के किसी फ़ज़ीलत का दावा करता है वह इन्सान नहीं है बल्कि शैतान का अंग है क्योंकि प्रत्येक फ़ज़ीलत की चाबी उस को दी गई है और प्रत्येक मार्फ़त का ख़ज़ाना उसको अता किया गया है। जो उसके माध्यम से नहीं पाता वह वंचित अज़ली है। हम क्या चीज़ हैं और हमारी वास्तविकता क्या है। हम काफ़िर-ए-नेमत होंगे यदि इस बात का इक़रार न करें कि तौहीद हक़ीक़ी हमने ईसी नबी के माध्यम से पाई और ज़िंदा ख़ुदा की शनाख़्त हमें ईसी कामिल नबी के माध्यम से और उसके नूर से मिली है और ख़ुदा के मुकालमात और मुख़ातबात का सौभाग्य भी जिससे हम उस का चेहरा देखते हैं ईसी बुज़ुर्ग नबी के माध्यम से हमें प्राप्त हुआ है इस आफ़ताब हिदायत की किरने धूप की तरह हम पर पड़ती है और इसी समय तक हम मुनव्वर रह सकते हैं जब तक कि हम उसके मुक़ाबिल पर हैं।

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन बहग 22 पृष्ठ 119-118)

इस इक़तेबास का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रिय सना ताहेरा चीमा ने प्रस्तुत किया :

इसके बाद प्रिय नबीह मलिक ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत पर अंग्रेज़ी भाषा में तक़रीर की

इसके बाद प्रिय फ़रीहा शमस, लायबा इफ़्तख़ार, ज़ैनब मायदा और प्रिय नबीह मलिक ने एक ग्रुप की सूरत में निमंलिखित नाअत सूरीली आवाज़ से पढ़ कर सुनाई :

बदरगाहे ज़ीशाने ख़ैरुल इनाम
शफ़ीउलवरा मरजाए ख़ास-ओ-आम

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आज्ञा से नास्रात ने प्रश्न किए :

प्रश्न : एक बच्ची ने प्रश्न किया कि हुज़ूर अनवर ने किस आयु में क़ुरआन-ए-करीम ख़त्म किया था। इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। मुझे आयु तो याद नहीं है। बचपन में कर लिया था। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। बच्चियां छः सात वर्ष की आयु में क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल कर लें तो बड़ी अच्छी बात है।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ बच्ची ने प्रश्न किया कि मैं आगे जाकर कौन सा मज़मून लूं। क्या लाईन इख़्तियार करूँ?

उत्तर : इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पढ़ाई में अच्छी हो तो डाक्टर बिन जाओ। टीचर बिन जाओ। या ज़बानें सीखो और मास्टर कर लो। तो अनुवाद के लिए वक़्फ़ कर सकती हो।

प्रश्न : एक बच्ची ने प्रश्न किया कि कौन सी आयु में नास्रात को हिजाब लेना चाहिए?

उत्तर : इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जब सात वर्ष की नास्रात हो जाती हो तो नमाज़ पढ़ने का आदेश है जब नमाज़ पढ़ोगी तो दुपट्टा ले कर पढ़ोगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कुछ सात वर्ष की बच्चियां अपनी आयु की दृष्टि से बड़ी लगती हैं तो उनके कपड़े भी उचित होने चाहिए

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया छोटी आयु में हिजाब लेकर, स्कार्फ लेकर स्कूल में जाओ, वहां फंक्शन होते हैं उनमें जाओ और बिना शर्म के लोगों के सामने प्रस्तुत हो।

प्रश्न : एक बच्ची ने प्रश्न किया कि सबसे ज़्यादा कौन सी दुआ करनी चाहिए?

उत्तर : इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि सबसे ज़्यादा दुआ यह करनी है कि तुम नमाज़ पढ़ो। पांचों नमाज़ें पढ़ लो तो यही तुम्हारी दुआ है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तुम यह दुआ किया करो कि ख़ुदा तआला मेरा ज्ञान बढ़ाए। पढ़ाई में अच्छा कर दे। यह दुआ किया करो कि ख़ुदा तआला मेरे माँ बाप पर रहम करे। वह मेरा ध्यान रखते हैं। मेरी पढ़ाई में मेरे खाने पीने में। मेरी ज़रूरियात पूरी करते हैं। मेरी बड़ी अच्छी तर्बीयत कर रहे हैं। ख़ुदा तआला उन पर रहम करे।

प्रश्न : एक बच्ची ने Halloween के हवाला से प्रश्न किया तो इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया यह उन लोगों की ट्रेडेशन है जिन का धर्म नहींथा। जिस दिन ये लोग Halloween मनाते हैं तो घरों पर मांगने आ जाते हैं। तो अपनी जान छुड़ाने के लिए चॉकलेट का डिब्बा दे दो। हिक्मत इसी में है कि बिना कारण झगड़े न किए जाएं परन्तु इस बात की आज्ञा नहीं है कि तुम भी उनके साथ मिलकर ऐसा करो

प्रश्न : एक बच्ची ने प्रश्न किया हुज़ूर अनवर प्रतिदिन कितना क़ुरआन-ए-मजीद पढ़ते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बहुत ज़्यादा दूसरे काम करने हों तो आधा पारा की तिलावत करता हूँ और पोना पारा भी पढ़ लेता हूँ और कभी ज़्यादा भी पढ़ लेता हूँ। बहरहाल कामों में व्यस्त हो जाऊं तो आधा पारा तो प्रतिदिन पढ़ता हूँ।

बच्ची ने बताया कि वह प्रतिदिन क़ुरआन-ए-करीम के चार पृष्ठ पढ़ती है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया सफ़हात के हिसाब से नहीं बल्कि रुकू के हिसाब से तिलावत किया करो। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया माता पिता अपने बच्चों, बच्चियों को बताएं कि

रुकू क्या होता है। सफ़हात की बजाय रुकू के हिसाब से पढ़ा करो।

प्रश्न : एक बच्ची ने प्रश्न किया कि यदि हम लड़कियों के स्कूल में हैं तो क्या बुर्क़ा पहनना, हिजाब लेना ज़रूरी है?

उत्तर : इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

यदि स्कूल में केवल लड़कियां ही हैं तो ज़रूरी नहीं है परन्तु यदि टीचर पुरुष हों तो फिर स्कार्फ लेना हिजाब लेना ज़रूरी है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जब भी स्कूल से बाहर निकलो तो फिर स्कार्फ लेना ज़रूरी है और पर्दे का ख्याल रखना ज़रूरी है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यदि कोई यह कहे कि स्कूल में तो स्कार्फ नहीं लिया और जब बाहर निकले तो ले लिया तो यह डबल स्टैंडर्ड है। परन्तु यह कदापि डबल स्टैंडर्ड नहीं है बल्कि अल्लाह और उसके रसूल का आदेश है।

प्रश्न : एक बच्ची ने प्रश्न किया कि शैतान को क्यों बनाया गया?

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

उत्तर : शैतान को इस लिए बनाया कि तुमको पता लगे कि तुम नेक हो या नहीं। यदि बुराई हो तो तब ही नेकी का पता लगेगा कि बुराई के मुक़ाबिल पर यह नेकी है।

ख़ुदा तआला ने नेकी और बदी दोनों रास्ते निर्धारित कर दिए हैं और साथ नसीहत भी की है कि नेकी का रास्ता इख़्तियार करो। परन्तु ख़ुदा तआला ने इन्सान को इख़्तियार दिया है कि ये दो रास्ते हैं चाहो तो नेकी का रास्ता इख़्तियार करो और चाहो तो बदी का रास्ता अपनाओ और साथ बता दिया कि बदी का रास्ता इख़्तियार करोगे तो सज़ा मिले गी और नेक रास्ता पर चलोगे तो ख़ुदा तआला जन्नत में दाख़िल करेगा। ख़ुदा तआला ने यह भी फ़रमाया नेक लोगों पर फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं और बदी के रास्तों पर चलने वाले शैतान की इत्तिबा करते हैं।

प्रश्न : एक बच्ची ने प्रश्न किया कि क्या हम पाकिस्तानी ड्रामे देख सकते हैं?

उत्तर : इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यदि गंद नहीं है तो देख सकते हैं। पाकिस्तानी ड्रामे तो इंडियन ड्रामों से भी गंदे हो गए हैं और मध्य में ऐसे इश्तिहार भी आ जाते हैं जिनसे तर्बीयत ख़राब होती है। अतः ऐसा ड्रामा जो साफ़ सुथरा हो और सबक़ आमोज़ हो वह देख सकती हो। ऐसा ड्रामा न देखो जो आप पर बुरा प्रभाव डाले और तुम अपने माँ बाप के विरुद्ध हो जाओ और बड़ों का अदब न करो। जो बड़ी लड़कियां हैं वह अपने खाविंदों से झगड़े शुरू दें।

अतः केवल शरीफ़ाना सबक़ आमोज़ ड्रामा देख सकती हो। और तुम्हारे अन्दर इतना हौसला होना चाहिए कि यदि कोई उनूचित सीन या इश्तिहार आ जाए तो चैनल बदल दो या बंद कर दो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया सबसे ज़रूरी और महत्वपूर्ण बात यह है कि नमाज़ का समय ज़ाए न हो। समय पर नमाज़ें अदा करो। क़ुरआन-ए-करीम की निरंतर तिलावत हो और कोई दीनी पुस्तक निरंतर पढ़ो। अपने अध्ययन में रखो। सारा दिन ड्रामे देखना, इंटरनैट पर बैठे रहना और On डीमांड चैनल पर प्रोग्राम देखना यह ग़लत तरीक़ है और ऐसा नहीं होना चाहिए।

प्रश्न : एक बच्ची ने प्रश्न किया कि क्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किसी को बताया था कि मैं एक नबी हूँ और मैं अहमदी हूँ?

उत्तर : इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसी समय अपने नबी होने के बारे में लिखा और बताया जब ख़ुदा तआला ने आपको बताया। जब तक ख़ुदा ने नहीं बताया आपने नहीं लिखा। और न कोई ऐलान फ़रमाया। बाक़ी जहां तक अहमदी नाम दिए जाने का वर्णन किया है। इस बारे में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दो नाम हैं मुहम्मद और अहमद। और जमाअत को अहमदी नाम देने का अवसर इस तरह पैदा हुआ कि प्रत्येक दस वर्ष बाद जनगणना होती है। जब 1901में हिंदुस्तान में जनगणना हुई तो इस में यह बताने के लिए कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वाले और आपकी बैअत में आने वाले दूसरे मुस्लमानों से अलग अलग प्रकट हों। तो उस समय आपने फ़रमाया कि धर्म के ख़ाना में अहमदी मुस्लमान लिखें। इस लिए उस समय आप अलैहिस्सलाम के मुतबईन अहमदी हैं।

नास्रात की यह क्लास मध्याह्न दो बजे अपने अंत को पहुंची अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बच्चियों को क़लम और चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

इसके बाद सवा दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार आज शाम फ़ैमिली मुलाक़ातें और नैशनल मज्लिस-ए-आमला लजना इमाल्लाह आयरलैंड की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग थी। और इसका प्रबन्ध होटल के ही एक हिस्सा में किया था।

साढ़े छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ पधारे और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज 24 फ़ैमिलीज़ के 64 लोग ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन मुलाक़ात करने वालों में से 22 लोग पुरुष तथा महिलाए ऐसे थे जो अपनी जीवन में पहली मर्तबा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पा रहे थे और इस सआदत पर बेहद ख़ुश थे कि उनकी जीवन में यह मुबारक दिन आया कि अपने प्यारे आक़ा के दीदार और क़ुरब में कुछ क्षण गुज़ारे और दुआओं के खज़ाने लिए और आज का यही दिन और ये मुबारक क्षण उनकी जीवन का सरमाया हैं।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ गालवे शहर के अतिरिक्त Dublin, Cork, Cavan, LimerickऔरAthlon के क्षेत्रों से आई थीं। इन सभी ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम आठ बजे तक जारी रहा

नैशनल मज्लिस-ए-आमला लजना इमाल्लाह आयरलैंड की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग।

इसके बाद नैशनल मज्लिस-ए-आमला लजना इमाल्लाह आयरलैंड की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई।

हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। इसके बाद आमिला के समस्त मेम्बरात ने बारी-बारी अपना परिचय करवाया :

नायब सदर लजना से हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि वह किस हैसियत से नैशनल आमिला में हैं क्योंकि नायब सदर के पास कोई और विभाग भी होना ज़रूरी है। इस पर सदर लजना ने कहा कि वह सदर लजना स्थानीय भी हैं।

सेक्रेटरी वक़्फ़-ए-नौ के बारे में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि सेक्रेटरी वक़्फ़ए-ए-नौ का तो नैशनल आमिला लजना में कोई ओहदा नहीं है। हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि उनको मुआविन सदर बना दें और उनसे वाकिफ़ात-ए-नौ का काम लें।

सेक्रेटरी तब्लीग़ से हुज़ूर अनवर ने तब्लीग़ी प्रोग्रामों और लीफ़ लेट्स की तक़सीम के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया:

हुज़ूर अनवर ने मीना-बाज़ार के हवाला से भी दरयाफ़त फ़रमाया कि क्या प्रोग्राम हुआ था। जिस पर सदर साहबा लजना ने बताया कि हम

शेष पृष्ठ 11 पर

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ02 का शेष

असद और ग़त्फ़ान दोनों हलीफ़ों के इस पर ईमान ले आने के बाद मज़ीद बढ़ गई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई और तुलेहा के मामले का समझोता न हुआ। जब ख़िलाफ़त की बागडोर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने संभाली और बाग़ी मुर्तद होने वाले को कुचलने के लिए फ़ौज तैयार की और क़ायदीन निर्धारित किए तो तुलेहा असदी की तरफ़ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ालिद बिन वलीद की क़ियादत में फ़ौज रवाना की। (सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत-ओ-कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी पृष्ठ 316-318 मुद्रित अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)(ओसोदुल ग़ाबा, भाग 3 पृष्ठ 94 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2016 ई.) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 290)

यह केवल मुर्तद नहीं थे या नबुव्वत के दावेदार नहीं थे बल्कि ये मुस्लमानों से जंगें भी किया करते थे और उनको नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश भी करते थे।

उयैना बिन हसन कौन था? इसके विषय में लिखा है। उयैना वही शख़्स है जो ग़ज़वा अहज़ाब के अवसर पर बनू फ़ज़ारह का सरदार था। इस ग़ज़वा के दौरान कुफ़्फ़ार के तीन लश्करों ने बनू कुरेज़ा से मिल कर मदीना पर ज़बरदस्त हमला करने का इरादा किया तो उनमें से एक लश्कर का सरदार उयैना था। ग़ज़व-ए-अहज़ाब में कुफ़्फ़ार की शिकस्त के बाद भी उसने मदीना पर हमला करने का इरादा किया था लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शहर से बाहर निकल कर उस के हमला को रोका और उसे पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। यह ग़ज़वा ज़ी करद कहलाता है।

(सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 139 मुद्रित शिरकत प्रिंटिंग प्रैस लाहौर)

उयैना बिन हिस्न् फ़तह मक्का से पहले इस्लाम लाया और इस में शिरकत की। फ़तह मक्का के अवसर पर यह मुस्लमान था। ग़ज़व-ए-हुनैन और तायफ में भी शिरकत की। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस को नौ हिज्री में बनू तमीम की सरकूबी के लिए पच्चास सवारों के साथ भेजा था जिनमें कोई भी अंसार या मुहाजिर सहाबी नहीं था और इस सरिय्या का सबब यह हुआ था कि बनू तमीम ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आमिल को सद्कात लेकर जाने से रोक दिया था। फिर अहद-ए-सिद्दीक़ी में बाग़ी मुर्तदों के साथ यह भी फ़िल्ला इर्तिदाद का शिकार हो गया और तुलेहा की तरफ़ मायल हो गया और उसकी बैअत कर ली। बहरहाल बाद में फिर यह इस्लाम की तरफ़ भी लौट आया था।

(अल् असाबा फ़ी फ़ी तमीज़ अल् सहाबा, भाग 4 पृष्ठ 639 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)(ज़िया उन्नबी अज़ पीर मुहम्मद अकरम शाह अल् अज़हरी, भाग 4 पृष्ठ 566 - 567 मुद्रित तख़लीक़ मर्कज़ प्रिंटर्ज़ लाहौर 1420 ई.)

ये लोग पहले भी इस्लाम के ख़िलाफ़ लड़ते रहे थे। फिर मुस्लमान हुए फिर लड़ाई शुरू कर दी। फिर लिखा है कि जब अबस और ज़ुबियान और उनके हामी बुज़खा मुक़ाम पर जमा हो गए तो तुलेहा ने बनू जदीला और ग़ौस को जो कि क़बीला तै की दो शाख़ें थीं कहला भेजा कि तुम फ़ौरन मेरे पास आ जाओ। इन क़बायल के कुछ लोग फ़ौरन उसके पास पहुंच गए और उन्होंने अपनी क़ौम वालों को भी हिदायत की कि वे उनसे आ मिलें। अतः वे लोग भी तुलेहा के पास आ गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को ज़ुल कस्सा से रवाना करने से क़बल हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि तुम अपनी क़ौम अर्थात क़बीला तै के पास जाओ ऐसा न हो कि वे बर्बाद हो जाएं। जंग करें और बर्बाद हों। हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी क़ौम के पास आए और ज़रवा और ग़ारिब में उनको रोक लिया और उनको इस्लाम की दावत दी और उनको ख़ौफ़ दिलाया। ज़रवा भी ग़तफ़ान के इलाक़े में एक जगह का नाम है और यह भी कहा जाता है कि बनू मुर्रा में बिन औफ़ के चश्मे का नाम है। बहरहाल उनके पीछे ही हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु रवाना हो गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको हुक्म दिया था कि पहले वह तै क़बीला के अतराफ़ से मुहिम का आग़ाज़ करें और फिर बुज़ाख़ह का रुख करें और वहां से आख़िर में बुताह जाएं और जब वे दुश्मन से फ़ारिग़ हो जाएं तो जब तक कि उनको जदीद अहकाम मौसूल न हों वे किसी और जगह हमले का क़सद न करें।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस अमर का इज़हार किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं ख़ैबर की तरफ़ रवाना हो रहे हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह इज़हार कर दिया। लोगों में मशहूर हो गया कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद ख़ैबर की तरफ़ रवाना हो रहे हैं और फिर वहां से मुड़ कर वे ख़ालिद से सलमा पहाड़ के अतराफ़ पर आ मिलेंगे। दूसरी रिवायत से मालूम होता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये तदबीर इसलिए की थी ताकि जब दुश्मन को यह ख़बर पहुंचे तो वे भयभीत हो जाए कि एक और फ़ौज भी है हालाँकि आप तमाम लश्कर हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के हमराह रवाना फ़र्मा चुके थे। हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु रवाना हुए। बुज़ाख़ह से उन्होंने मुड़ कर अजा का रुख किया। अजा और सलमा ये दो पहाड़ हैं। सलमा का पहले भी वर्णन हो चुका है जो समीरा के बाएं तरफ़ हैं। एक कथन के मुताबिक़ अजा बनू तै का एक पहाड़ है।

बहरहाल हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह ज़ाहिर किया कि वे ख़ैबर की तरफ़ जा रहे हैं फिर वहां से तै के मुक़ाबला पर पलटेंगे। इस तदबीर से क़बीला तै के लोग अपनी जगह बैठे रहे और तुलेहा के पास जाने से रुक गए। हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु भी तै के पास आए और उनको इस्लाम की दावत दी। उन्होंने कहा कि अबुल फ़सील की हरगिज़ इताअत नहीं करेंगे। अबुल फ़सील से उनकी मुराद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो थे। फ़सील ऊंटनी या गाय के बच्चे को कहते हैं जो अपनी माँ से बिछड़ गया हो या जिसका दूध छुड़ा दिया गया हो। चूँकि कलिमा बिक्र कलिमा फ़सील दोनों के अर्थ ऊंट के बच्चे के हैं इसलिए कुछ लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अपमान के उद्देश्य से अबुल लफ़सील अर्थात ऊंट के बच्चे का बाप कहते थे। हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि तुम्हारी जानिब एक ऐसा लश्कर बढ़ा चला आ रहा है जो तुम पर कदापि रहम नहीं करेगा और क़तल-ओ-ग़ारत का बाज़ार इस तरह गर्म करेगा कि किसी भी शख़्स को अमान नहीं मिल सकेगी। मैंने तुम्हें समझा दिया आगे तुम जानो और तुम्हारा काम।

एक और रिवायत के मुताबिक़ उन्होंने अपने क़बीला के लोगों को यह भी कहा कि फिर उस वक़्त तुम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़हलुल अकबर के उपनाम से याद करोगे। फ़हल हर जानवर के पुरुष को कहते हैं अर्थात अब तो तुम तम्सख़र और हक़ारत से उनको ऊंट का छोटा सा बच्चा कह रहे हो फिर तुम उनको मज़बूत नर ऊंट कहने पर मजबूर होगे। क़बीला तै के लोगों ने उनकी बातें सुनके कहा कि अच्छा तुम इस हमला-आवर लश्कर से जा कर मिलो और उसे हम पर हमला करने से रोको यहां तक कि हम अपने इन हमक़ौम लोगों को जो बुज़ाख़ह में हैं वापस बुला लें। हमें अंदेशा है कि अगर हम तुलेहा की मुख़ालिफ़त करेंगे जबकि हमारे लोग इसके क़बज़ा में हैं तो वे इन सबको क़तल कर देगा या उनको बंधक की हैसियत से क़ैद कर लेगा। यह उस के बारे में प्रसिद्ध था कि अपने मुख़ालेफ़ीन को वे फिर छोड़ता नहीं है और तै क़बीला के लोगों ने भी कहा कि क्योंकि हमारे लोग वहां हैं इसलिए अगर हम आ गए या उस को भनक पड़ गई कि ये मुस्लमान होने वाले हैं तो यह क़तल कर देगा।

हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हुने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु का सखा के स्थान में इस्तिक़बाल किया। सखा भी मदीना के मुज़ाफ़ात में एक जगह है। हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ालिद! आप मुझे तीन दिन की मोहलत दें। पाँच सौ जंगजू आपके साथ इकट्ठे हो जाऐंगे जिनके साथ मिलकर आप दुश्मन पर हमला करें। यह बात इस से बेहतर है कि आप उनको जहन्नुम की आग में दाख़िल करें अर्थात तै क़बीले के लोग आपके साथ आ जाऐंगे और उनके साथ लड़ाई हो जाएं। हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी तजवीज़ मान ली। हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी क़ौम के पास आए। इस से पहले क़बीला तै के लोग बुज़ाख़ह से अपनी क़ौम वालों को वापस बुलाने के लिए आदमी भेज चुके थे। क़बीले के लोगों ने तुलेहा के लश्कर में अपने आदमियों को यह पैग़ाम भेजा कि वह फ़ौरन वापस आ जाएं क्योंकि मुस्लमानों ने तुलेहा के लश्कर पर हमला करने से पहले उन पर चढ़ाई अर्थात तै क़बीले पर चढ़ाई करने का इरादा किया है। इसलिए वे आएं और इस हमला को रोकें। यह तदबीर उन्होंने चली। इसलिए वे बतौर कमक अपनी क़ौम के पास वापिस आ गए। अगर ऐसा न होता तो तुलेहा और इस के साथी उन्हें ज़िंदा न छोड़ते। फिर हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को आकर अपने क़बीले के दुबारा इस्लाम ले आने की सूचना दी।

एक लेखक ने लिखा है कि अदी का यह महान कारनामा है कि उन्होंने अपनी क़ौम को इस्लामी फ़ौज में शमूलीयत की दावत दी।

बनू तै के लश्कर ख़ालिद में शमूलीयत दुश्मन की पहली शिकस्त थी क्योंकि क़बीला तै का शुमार जज़ीरा अरब के बहादुर क़बायल में होता था। अन्य क़बायल उनको एहमीयत देते थे। उनकी ताक़त और क़ुव्वत का एतबार था। उनसे ख़ौफ़ खाते थे। अपने इलाक़े में उनको इज़्ज़त और ग़लबा हासिल था। पड़ोसी क़बायल उनके हलीफ़ बनने के लिए तैयार रहते थे।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 260 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (अब्दुल्लाह बिन सबह और दूसरे तारीख़ी अफ़साने, भाग 2-3 पृष्ठ 92 अनुवादक सय्यद कलबी हुसैन रिज़वी, मुद्रित 1427) (सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल मुतर्जिम, पृष्ठ 138 मुद्रित शिरकत प्रिंटिंग प्रैस लाहौर)(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मुहम्द सलाबी अनुवादक, पृष्ठ 324 मकतबा अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल,उर्दू अनुवाद शेख़ अहमद पानीपति, पृष्ठ 157)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 6 भाग 1 पृष्ठ 119) (अल् मुन्जिद, पृष्ठ 585 अंतर्गत शब्द फहल, पृष्ठ 570-571)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 157 ज़व्वार एकेडेमी कराची)

फिर हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यहां से जिदीला के मुक़ाबले के ख़्याल से उनसुर की तरफ़ कूच किया। उन्सुर भी क़बीला तै के एक चशमा का नाम है। वहां इस चशमा के इर्द-गिर्द आबादी थी। हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा कि क़बीला तै की मिसाल एक परिंदे की है और क़बीला जदीला क़बीला तै के दो बाज़ुओं में से एक बाज़ू है। आप मुझे कुछ रोज़ की मोहलत दें। शायद अल्लाह तआला जदीला को भी राह-ए-रास्त पर ले आए। बग़ैर जंग के ही यह लोग ठीक हो जाएं जिस तरह उसने ग़ौस अर्थात क़बीला तै की दूसरी शाख़ को गुमराही से निकाल लिया है। हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐसा ही किया। हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु जदीला के पास आए। हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु नियमित उनसे बातचीत करते रहे यहां तक कि उन्होंने हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत की और उनके इस्लाम ले आने की खुशखबरी हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को आकर दी और इस क़बीले के एक हज़ार सवारों के साथ मुस्लमानों के पास आ गए। (अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 260 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1पृष्ठ 314)

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु क़बीला तै के क़बूल इस्लाम के बाद तुलेहा असदी की तरफ़ रवाना हुए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु जब दुश्मन के क़रीब पहुंच गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उकाशा बिन मोहसिन और हज़रत साबित बिन अक्रम रज़ियल्लाहु अन्हु को दुश्मन की ख़बर लाने के लिए आगे रवाना किया।

जब ये दुश्मन के क़रीब पहुंचे तो तुलेहा और इस का भाई सलमा देखने के लिए और दरयाफ़त-ए-हाल के लिए निकले। सलमा ने हज़रत साबित को मोहलत भी नहीं दी और उन्हें शहीद कर दिया और तुलेहा ने जब देखा कि उस का भाई अपने मुक़ाबिल से फ़ारिग़ हो चुका है तो उसने उसे अपने मद्द-ए-मुक़ाबिल अर्थात उकाशा के ख़िलाफ़ मदद के लिए पुकारा कि आओ मेरी मदद करो अन्यथा यह व्यक्ति मुझे खा जाएगा। इसलिए इन दोनों ने मिलकर हज़रत उकाशा रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला किया और उनको भी शहीद कर दिया और अपनी जगह वापिस चले गए।

एक रिवायत यह भी है कि हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उकाशा रज़ियल्लाहु अन्हु और साबित अंसारी को दुश्मन की ख़बरगीरी के लिए भेजा तो तुलेहा का भाई हिबाल उनको मिला तो इन दोनों ने उस को क़तल कर दिया। किस हद तक इस में सदाक़त है अल्लाह जानता है या अगर यह रिवायत सही है तो वह लड़ाई के लिए आमादा हुआ तो लड़ाई हुई तब क़तल हुआ क्योंकि बहरहाल ये लोग तो ख़बर लेने के लिए गए थे। लड़ाई करने के लिए गए ही नहीं थे। जब यह ख़बर तुलेहा को पहुंची तो तुलेहा और उसका भाई सलमा निकले। तुलेहा ने हज़रत उकाशा को शहीद कर दिया और उसके भाई ने हज़रत साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को और फिर दोनों वापिस चले गए।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 261-262 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)(अल्कामिल फ़िल तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 208-209 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया 2003 ई.)

हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी फ़ौज के साथ आगे बढ़े यहां तक वे उस जगह पहुंचे जहां हज़रत साबित रज़ियल्लाहु अन्हु मक़्तूल होने की हालत में पड़े हुए थे लेकिन उनमें से किसी को उनकी ख़बर नहीं थी यहां तक कि अचानक किसी सवारी का उन पर पांव आ गया। मुस्लमानों पर यह बहुत कष्टदायक गुज़रा। फिर जब ग़ौर से देखा तो मालूम हुआ कि हज़रत उकाशा बिन मोहसिन रज़ियल्लाहु अन्हु भी शहीद पड़े हैं। इस से मुस्लमान और भी ग़मगीं हो गए और कहने लगे कि मुस्लमानों के सरदारों में से दो बड़े सरदार और घुड़सवारों में से दो घुड़सवार शहीद हो गए। तो इस सूरत-ए-हाल को देखकर हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ौज को तैयार करने लगे। फ़ौज को जंग के लिए तर्तीब दिया और क़बीला तै की तरफ़ लौट गए। एक रिवायत में है हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु से कहला भेजा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास आकर चंद रोज़ क़ियाम करें। मैं तै के तमाम क़बायल के पास आदमी भेजता हूँ और जिस क़दर मुस्लमान उस वक़्त आपके साथ हैं उनसे कहीं ज़्यादा फ़ौज आप रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए जमा किए देता हूँ और फिर मैं ख़ुद आपके दुश्मन के मुक़ाबले में आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ चलूँगा। अतः आप रज़ियल्लाहु अन्हु मेरी तरफ़ चल पड़े अर्थात इस तरफ़ आ गए।

एक रिवायत में है कि हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़स्बा सल्मा् में उरुक स्थान पर क़ियाम किया था परन्तु दूसरी रिवायत के मुताबिक़ आपने आजा मुक़ाम पर क़ियाम किया था। यहां से हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तुलेहा के मुक़ाबले के लिए अपनी फ़ौज को तैयार किया और बुज़ाख़ह पर दोनों का मुक़ाबला हुआ। जब लोगों ने लड़ाई शुरू की तो उयैना ने बनू फ़ज़ारह के सात सौ अफ़राद के साथ मिलकर तुलेहा के साथ में सख़्त लड़ाई की।

एना और तुलेहा इकट्ठे मिल गए। उन्होंने मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग की। तुलेहा अपने ऊनी ख़ेमे के सेहन में चादर ओढ़े बैठा था। यह नबी बना हुआ था इसलिए यह ख़ेमे में बैठा रहा और ग़ैब की ख़बरें देता था। कहता था तुम लोग जंग लड़ो में यहां से तुम्हें बताता हूँ कि क्या नतीजा निकलने वाला है जबकि लोग क़िताल में व्यस्त थे। जब उयैना को लड़ाई में तकलीफ़ उठाना पड़ी और उस का शदीद नुक़्सान हुआ तो वह तुलेहा के पास आया और कहा क्या अभी तक जिब्राईल तुम्हारे पास नहीं आए? जंग में तो मार पड़ रही है तुम कहते हो मुझे इलहाम होते हैं, वह्यी होती है और जिब्राईल मुझे बताएँगे क्या होना है तो बताओ अभी तक कुछ नतीजा नहीं निकला? जिब्राईल आए नहीं? उसने कहा नहीं। उयैना वापस गया फिर लड़ाई में मसरूफ़ हो गया। जब उस को दुबारा लड़ाई की शिद्दत ने परेशान कर दिया तो वह फिर तुलेहा के पास आया और कहा कि तुम्हारा बुरा हो क्या जिब्राईल अभी तक तुम्हारे पास नहीं आए? उसने कहा अल्लाह की क़सम नहीं आए। उयैना ने क़सम खाते हुए कहा कब आएँगे? हमारा तो काम समाप्त हुआ चाहता है। वह फिर मैदान-ए-जंग में पलट कर लड़ने लगा और अब जब फिर उसे नाकामी हुई तो वह फिर तुलेहा के पास गया और पूछा क्या जिब्राईल तुम्हारे पास अभी तक नहीं आए? तुलेहा ने कहा हाँ आए हैं। उयैना ने पूछा फिर जिब्राईल ने क्या कहा? तुलेहा ने कहा उन्होंने मुझसे कहा है कि तेरी चक्की भी उनकी चक्की की तरह होगी और एक ऐसा वाक़िया होगा, तेरा ऐसा बोल-बाला होगा कि जो तुम कभी भुला नहीं सकोगे। उयैना ने यह सुना तो अपने दिल में कहा कि अल्लाह जानता है कि अनक़रीब ऐसे वाक़ियात पेश आएँगे जिन्हें तुम बदल नहीं सकोगे या भुला नहीं सकोगे। फिर वह अपनी क़ौम के पास आया और इस क़ौम से कहा कि हे फ़ुज़ारा! बख़ुदा यह तुलेहा कज़्ज़ाब है। अतः तुम लोग वापस चलो। इस पर तमाम बनू फ़ज़ारह लड़ाई से किनारा-कश हो गए और उन लोगों को शिकस्त हुई तो वह भागे और तुलेहा के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गए और पूछने लगे कि आप हमें क्या हुक्म देते हैं। इस से पहले ही तुलेहा ने अपने लिए अपना घोड़ा और अपनी बीवी नवार के लिए ऊंट तैयार कर रखा था। वह खड़ा हुआ और लपक कर अपने घोड़े पर सवार हुआ और अपनी बीवी को सवार किया फिर इसके साथ भाग गया और अपने साथियों से कहा कि तुम में से जो कोई भी इस की इस्तिताअत रखता है जैसा मैं ने किया है वह भी ऐसा करे और अपने अहल को बचाए। दौड़ जाओ मैदान-ए-जंग से। फिर तुलेहा ने हूशीयह की राह इख़्तियार की यहां तक कि शाम पहुंच गया। उसकी जमाअत परागंदा हो गई और अल्लाह ने उनमें से बहुतों को मार दिया। बहुत से मारे गए। एक रिवायत के मुताबिक़ तुलेहा मैदान-ए-जंग से भाग कर नकआ में बनू कलब के पास मुक़ीम हो गया और वहां जा के इस्लाम ले आया। निकआ भी तायफ के अतराफ़ में मक्का के क़रीब एक जगह का नाम है। और यह भी कहा जाता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात तक वह बनू कलब में ही मुक़ीम रहा। (अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 261-262- 264 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 5 पृष्ठ 346 भाग 2 पृष्ठ 215)

बनू आमिर अपने ख़ास और आम लोगों के साथ उस के क़रीब बैठे हुए थे और क़बायल सुलेम और हवाज़िन का भी यही हाल था। फिर जब अल्लाह ने बनू फुज्जारह और तुलेहा को बुरी तरह शिकस्त दी तो वह क़बायल यह कहते हुए आए कि जिस दीन से हम निकले थे हम फिर इसी में दाख़िल होते हैं। वह ख़ुद ही आ कर इस्लाम में शामिल हो गए और कहा हम अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाते हैं और अपने जान और माल के मुताल्लिक़ अल्लाह और

उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैसले को स्वीकार करते हैं।

(अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 260 से 262 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

तारीख़ तिबरी की एक रिवायत में है कि अहल बुज़ाख़ह की शिकस्त के बाद बनू आमिर आए और उन्होंने कहा कि हम दीन में दाख़िल होते हैं जिससे हम निकल गए थे। हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे इस शर्त पर बैअत ली जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अहल बुज़ाख़ह अर्थात असद, ग़तफ़ान और तै से ली थी और उन सबने इस्लाम क़बूल करने की शर्त पर इताअत क़बूल कर ली। इस बैअत के शब्द ये थे। तुमसे अल्लाह तआला का पक्का वादा लिया जाता है कि तुम ज़रूर अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाओगे और ज़रूर नमाज़ को क़ायम करोगे और ज़रूर ज़कात अदा करोगे और इसी चीज़ पर तुम अपने बेटों और औरतों की तरफ़ से भी बैअत करोगे। इस पर वे कहते हाँ।

(अल् कामिल फ़ील तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 210-211 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया 2003 ई.)

हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने असद, ग़तफ़ान, हौज़ान, सुलेम और तैय में से किसी की बैअत क़बूल नहीं की सिवाए इसके कि वे इन समस्त लोगों को मुस्लमानों के हवाले कर दें जिन्हों ने मुर्तद होने की हालत में अपने पास के मुस्लमानों को आग में जलाया था और उनके अंग काटे थे और मुस्लमानों पर चढ़ाई की थी।

हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे यह बैअत इस सूरत में ली कि अपने उन लोगों को हमारे सपुर्द करो जिन्हों ने मुस्लमानों को नुक़्सान पहुंचाया, क़तल किया, उनके घरों को आग लगाई। मुस्लमानों को आग में जलाया। फिर उनके अंग काटे और आग में जलाया। ये सारी बातें कीं। उन्होंने कहा हमारे हवाले करोगे फिर तुम्हारी बैअत क़बूल की जाएगी। वे ज़ुल्म करने वालें जो हैं, सारे मुजरिम जो हैं वे सब पेश हों। अतः इन तमाम क़बायल ने उन लोगों को हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द कर दिया तो हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन क़बायल की बैअत को क़बूल कर लिया और जिन लोगों ने मुस्लमानों पर मज़ालिम किए थे ज़ुलम करने वाले जो लोग थे उनके अंग भी कटवा दिए और उनको आग में भी जलाया गया।

(الاستقصا لاخبار دول المغرب الاقصی, भाग 1 पृष्ठ 76 मुद्रित दारुल क़ुतुब1997 ई.)

बहरहाल जो ज़ुलम उन्होंने मुस्लमानों पर किए थे जैसा कि पिछले ख़ुतबा में मैं बयान कर चुका हूँ सज़ा के तौर पर उनसे इसी तरह सुलूक किया गया।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के एक पत्र का वर्णन किया है। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुर्रह बिन हुबैरा और उस के चंद साथियों को रस्सियों से बांध दिया और फिर क़ुर्रह और दूसरे क़ैदियों को हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास रवाना किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में लिखा कि बनू आमिर इस्लाम से पीछे हटने के बाद फिर से इस्लाम में दाख़िल हो गए हैं। जिन क़बायल से मेरी जंग हुई या जिनसे बग़ैर जंग के मुसालहत हुई मैं ने उन सबसे किसी की बैअत क़बूल नहीं की यहां तक कि वे उन लोगों को मेरे पास लाएंगे जिन्हों ने मुस्लमानों पर तरह तरह के मज़ालिम किए थे। मैं ने उनको क़तल कर दिया। क़ुर्रह और उसके साथियों को आपकी ख़िदमत में भेज रहा हूँ।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम एक ख़त लिखा जो नाफ़े से मर्वी है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस ख़त के जवाब में हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा कि जो कुछ तुमने किया और जो कामयाबी तुमको हासिल हुई अल्लाह तुमको इसकी जज़ाए ख़ैर दे। तुम अपने हर काम में अल्लाह से डरते रहो। اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ (अन्हल : 129) यक़ीनन अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तक़्वा इख़तियार करते हैं और जो एहसान करने वाले हैं।

तुम अल्लाह के काम में पूरी जद्द-ओ-जहद करना और सुस्ती न करना। जिस शख़्स ने किसी मुस्लमान को मारा हो और वह तुम्हारे हाथ लग जाए तो उस को ज़रूर क़तल कर दो और इस तरह क़तल करो कि दूसरे इबरत पकड़ें। वे लोग जिन्हों ने ख़ुदा के हुक्म से ना-फ़रमानी की हो और इस्लाम के दुश्मन हों उनके क़तल से अगर इस्लाम को फ़ायदा पहुंचता हो तो क़तल कर सकते हो। हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु एक माह बुज़ाख़ह में फ़िरोकश रहे और इस किस्म के लोगों की तलाश में हर तरफ़ छापे मार कर उन लोगों को गिरफ़्तार करते रहे। (तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 265 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.) और यूं हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की हिदायत के मुताबिक़ उन लोगों को सख़्त सज़ाएं दीं।

क़ुर्रह बिन हुबैरा और उयैना बिन हुस्न के क़ैद हो कर मदीना आने के मुताल्लिक़ तारीख़ तिब्री में इस तरह वर्णन आता है कि हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बनू आमिर के विषय का तसफ़ीया कर के जब उनसे बैअत ले ली और उयैना बिन हसन और क़ुर्रह बिन हुबैरा को क़ैद कर के हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास भेज दिया और जब यह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने आए तो क़ुर्रह ने कहा कि हे ख़लीफ़ा रसूल सल्लल्लाहो वसल्लम! मैं मुस्लमान हूँ। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो मेरे इस्लाम के गवाह हैं। जब वे मेरे पास सफ़र के दौरान आए मैं ने उनको अपना मेहमान बनाया, उनकी ताज़ीम-ओ-तकरीम की और उनकी हिफ़ाज़त की। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को बुला कर उसकी तसदीक़ चाही। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने तमाम वाक़िया वर्णन किए और जो कुछ क़ुर्रह ने कहा था वह बताया और जब वह ज़कात के मुताल्लिक़ उस की गुफ़्तगु को वर्णन करने लगे तो क़ुर्रह ने कहा बस कीजीए आगे वर्णन न करें। इस पर उन्होंने कहा अल्लाह की रहमत हो। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा यह नहीं हो सकता। मैं तो पूरी बात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से वर्णन करूँगा। इसलिए उन्होंने तमाम गुफ़्तगु वर्णन कर दी। क़ुर्रह ने ज़कू के हवाले से पहले कहा था कि उसके मुतालिबा को ख़त्म कर दें तो अरब बात सुनेंगे अर्थात ज़कात न ली जाए। इस पर हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा गोया तुम काफ़िर हो चुके तो क़ुर्रह ने कहा फिर आप ज़कात के मुतालिबे का एक वक़्त निर्धारित कर दें तो हम लोग मिलकर फ़ैसला कर लेंगे कि ज़कात देनी है कि नहीं देनी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस से दरगुज़र किया। बहरहाल उस की बातें सुनने के बावजूद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस से दरगुज़र किया और उस की जान बख़शी कर दी।

उयैना बिन हसन इस हालत में मदीना आया कि इस के दोनों हाथ रस्सी से इस की गर्दन पर बंधे थे। मदीना के लड़के उसे खजूर की शाख़ें चुभो रहे थे और कह रहे थे कि हे अल्लाह के दुश्मन! किया ईमान लाने के बाद तू काफ़िर हो गया है? तो इस ने कहा बख़ुदा! मैं आज के दिन तक कभी अल्लाह पर ईमान ही नहीं लाया था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस से दरगुज़र किया और उसकी भी जान बख़शी कर दी।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 263-264 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

एक और मुसन्निफ़ लिखते हैं कि उयैना को ख़लीफ़ा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास हाज़िर किया गया। उसने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से अफ़ु और दर्गुज़र का ऐसा बरताव पाया जिसका उसको यक़ीन नहीं था। आपने उस के हाथ खोलने का हुक्म दिया। फिर इस से तौबा का मुतालिबा किया तो उयैना ने ख़ालिस तौबा का ऐलान किया और अपनी ग़लतियों का एतराफ़ करते हुए माज़रत पेश की और इस्लाम लाया फिर अच्छी तरह इस्लाम पर कारबन्द रहा।

(सय्यदना अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी पृष्ठ 326 मकतबा अल् फ़ुर्क़ान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

झूठी नबुव्वत का दावा करने वाले और बाग़ी, तुलेहा असदी ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया था। उसके बारे में लिखा है कि तुलेहा असदी के इस्लाम लाने का कारण यह हुआ कि जब उसे इत्तिला मिली कि क़बीला असद, ग़त्फ़ान और बनू आमिर मुस्लमान हो चुके हैं तो वह भी मुस्लमान हो गया। फिर वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की इमारत में उमरा करने मक्का रवाना हुआ। वह मदीना के अतराफ़ से गुज़रा तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से अर्ज़ किया गया यह तुलेहा है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया में इस का क्या करूँ? इस को छोड़ दो। निसंदेह अल्लाह ने उसे इस्लाम की तरफ़ हिदायत दे दी है। तुलेहा मक्का की तरफ़ गया और उमरा अदा किया। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़लीफ़ा होने के बाद उनकी बैअत करने आया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस से कहा कि तुम उकाशा और साबित के क़ातिल हो ख़ुदा की कसम! मैं कभी तुमको पसंद नहीं कर सकता। तुलेहा ने कहा हे अमीरुल मोमनीन! आप इन दो शख़्सों का क्या ग़म करते हैं जिनको अल्लाह ने मेरे हाथों से इज़्ज़त दी। शहीद हुए और मुझे इन दोनों के हाथों अपमानित नहीं किया। अर्थात में ज़लील नहीं हुआ।

उनके हमले से मरा नहीं वर्ना मैं जहन्नुम में जाता और आज मैं इस्लाम क़बूल कर के अल्लाह तआला का फ़ज़्ल पाने वाला बिन रहा हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस से बैअत लेली और कहा हे धोखेबाज़! तुम्हारी भविष्यवाणी में से क्या बाक़ी है? अर्थात तुम ज्योतिष थे इस में से अभी भी कुछ ज्योतिष का काम करते हो? उसने कहा कि एक-आध फूंक मार लेता हूँ। फिर वह अपनी क़ौम की क़ियामगाह की तरफ़ आया और वहीं मुक़ीम रहा। (तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 264 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

इराक़ की जंगों में तुलेहा ने ईरानियों के मुक़ाबले में कारहाए नुमायां अंजाम दिए। मुस्लमान होने के बाद इराक़ की जंगों में यह लड़ा और अच्छा लड़ा और जंग नहावन्द में 21 हिज्री में शहीद हुआ।

(हज़रत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 144 बुक कॉर्नर शोरूम बुक स्ट्रीट जहलम पाकिस्तान) (अलासाबा फ़ी तमीईज़ अल्सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 441 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद का ज़फ़र, यह एक इलाक़ा है इस जानिब जाना और उम्मे ज़मल सलमा बिंत उम्मे किर्फा की तरफ़ पेशक़दमी। उम्मे ज़मल का नाम सलमा बिंत मालिक बिन हुज़ैफ़ा था जो अपनी माँ उम्मे कर्फा बिंत रबीह से समानता रखती थी। वह इज़्ज़त और शौहरत में अपनी माँ जैसी थी और उसके पास उम्म करफ़ा का ऊंट भी था।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 265 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 इ.)

उम्मे कर्फा का परिचय यह है कि उम्मे कर्फा का नाम फ़ातिमा बिंत रबीया था और वह बनू फ़ज़ारह की सरदार थी। यह औरत अपनी क़ुव्वत और हिफ़ाज़ती इंतिज़ामात के तौर पर एक उदाहरण मानी जाती थी। इस के घर में हर वक़्त पच्चास तलवारें तनी रहती थीं और पच्चास तलवारों वाले पुरुष हर वक़त वहां मौजूद होते थे। ये सब के सब उसके बेटे और पोते थे। इसके एक बेटे का नाम करफ़ा था उस की वजह से इस की कुनिय्यत उम्मे कर्फा थी जबकि उस का असली नाम फ़ातिमा बिंत रबीया था। इस का घर वादी अलकुरा की एक जानिब था जो मदीना तुय्यबा से सात रात की दूरी पर था।

(पैग़ंबर-ए- इस्लाम और ग़ज़वात और सराया अज़ हकीम महमूद ज़फ़र, पृष्ठ 447 मुद्रित शफ़ीक़ प्रैस)

उम्मे करफ़ा की तरफ़ एक सिरया छः हिज्री में वक़ूअ पज़ीर हुआ। उम्मे कर्फा की सरकूबी की एक वजह यह थी कि उसने मदीना पर हमला करने और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करने की साज़िश की थी। इस बारे में एक मुसन्निफ़ ने लिखा है कि एक दफ़ा उसने अपने तीस बेटों और पोतों का एक दस्ता तैयार किया और कहा कि मदीना पर चढ़ाई करो और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करो। इसलिए मुस्लमानों ने इस फ़िल्ला बाज़ औरत को कैफ़र-ए-किरदार तक पहुंचा दिया।

(ज़िया-उन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अज़ पीर मुहम्मद अकरम शाह अल् अज़हरी, भाग 4 पृष्ठ 121 मुद्रित तख़लीक़ मर्कज़ प्रिंटर्ज़ लाहौर 1420)

इस का दूसरा सबब यह था कि हज़रत ज़ैद बिन हारिसा तिजारत की ग़रज़ से शाम की तरफ़ रवाना हुए। उनके पास अन्य सहाबा किराम के अम्वाल-ए-तिजारत थे। जब वादी अल् कुरा पहुंचे तो क़बीला फ़ुज्जार की शाख़ बनू बदर के बहुत से आदमी निकल आए। उन्होंने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथियों को सख़्त मारा पीटा और सारा सामान भी छीन लिया। उन्होंने वापिस आकर बारगा-ए-रिसालत में यह वाक़िया अर्ज़ किया। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर उन के साथ भेजा ताकि इन लुटेरों की भर्त्सना करे।

(ज़िया उन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अज़ पीर मुहम्मद अकरम शाह अल् अज़हरी, भाग 4 पृष्ठ 120 मुद्रित ज़ायाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़् लाहौर)

उम्मे करफ़ा की बेटी उम्मे ज़मल सलमा का वाक़िया यूं है कि ग़तफ़ान, तैय, सुलेम और हौवाज़ान के बाअज़ लोग जिन्हों ने बुज़ाख़ह में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों शिकस्त खाई थी, भाग कर उम्म-ए-ज़मल सलमा बिंत मालिक के पास पहुंचे और वादा किया कि इसके साथ मिल कर मुस्लमानों के साथ जंग करते हुए जानें क़ुर्बान कर देंगे लेकिन पीछे नहीं हटेंगे।

(सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु मंसूब ब उस्ताज़ उम्र अबू नसर, पृष्ठ 610 मुश्ताक़ बुक कॉर्नर उर्दू बाज़ार लाहौर)

ग़त्फ़ान के शिकस्त ख़ूर्दा लोग ज़फ़र में जमा हो गए। यह ज़फ़र जो है बसरा और मदीना के रास्ते पर एक मुक़ाम है। यह हव्वाब के क़रीब एक मुक़ाम है। हव्वाब भी मदीना और बसरा के रास्ते पर एक जगह है और वहां एक कुँआं है। वहां उम्मे ज़मल सलमा ने उन लोगों को उनकी शिकस्त पर ग़ैरत दिलाई और जंग का हुक्म दिया और फिर ख़ुद भी मुख़्तलिफ़ क़बायल में बार-बार चक्कर लगा कर उनको हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से जंग के लिए उकसाया यहां तक कि वे लोग उनके पास जमा हो गए और जंग के लिए दिलेर हो गए।

यह मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग के लिए भड़काने वाली थी और हर तरफ़ से भटके हुए लोग उसके पास आ गए। इस से क़बल उम्मे कर्फा की ज़िंदगी में यह उम्मे ज़मल सलमा क़ैद हो कर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को मिली थी। उन्होंने उसे आज़ाद कर दिया था। यह कुछ अरसा उनके पास रही फिर अपनी क़ौम में चली आई। वहां जा के मुर्तद हो गई।

(अल् कामिल फिल तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 211 ज़िक्र ذکر ردۃ بنی عامر، وھوازن وسلیم، मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया 2003 ई.) (अल् मोजमुल बुल्दान, भाग 4 पृष्ठ 68 भाग 2 पृष्ठ 360)

जब हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को उस की इत्तिला हुई वह उस वक़्त मुजरिमों की गिरफ़्तारी, ज़कात की तहसील, दावत-ए-इस्लाम और लोगों की तसकीन में मुनहमिक थे तो उम्मे ज़मल सलमा के मुक़ाबला के लिए बढ़े जिसकी शौकत और ताक़त बहुत बढ़ चुकी थी और इस का मामला बहुत शिद्दत इख़्तियार कर गया था। अतः हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु उसके और उसकी जमईयतों से मुक़ाबले के लिए आगे बढ़े। निहायत शदीद जंग हुई। उम्मे ज़मल सलमा उस वक़्त अपनी माँ की तरह बड़ी शान से अपनी माँ के ऊंट पर सवार थी और दोनों लश्करों के दरमयान शदीद जंग हुई। उम्मे ज़मल ऊंट पर सवार इश्तिआल अंगेज़ तक़रीरों से बराबर फ़ौज को जोश दिला रही थी। मुर्तद होने वाले भी बड़ी बहादुरी से जान तोड़ कर लड़ रहे थे। उम्मे ज़मल के ऊंट के पास दौ सौ ऊंट और थे जिन पर बड़े बड़े बहादुर सवार थे और बड़ी बहादुरी से उम्म-ए-ज़मल की हिफ़ाज़त कर रहे थे। मुस्लमान शहसवारों ने उम्मे ज़मल के पास पहुंचने की सरतोड़ कोशिश की लेकिन इस के मुहाफ़िज़ों ने हर बार उन्हें पीछे हटा दिया। पूरे सौ आदमियों को क़तल करने के बाद मुस्लमान आख़िर कार उम्मे ज़मल के ऊंट के क़रीब पहुंचे। वहां पहुंचते ही उन्होंने ऊंट की कौंचें काट डालीं और उम्मे ज़मल को क़तल कर दिया। इसके साथियों ने जब उसके ऊंट को गिरते और उसे कतल होते देखा तो उन की हिम्मत ने जवाब दे दिया और बदहवास हो कर बे तहाशा मैदान जंग से भागने लगे। इस तरह इस फ़िल्ला की आग ठंडी हो गई और जज़ीरा नुमा अरब के शुमाल मशरिक़ी हिस्सा में इर्तिदाद और बग़ावत का ख़ातमा हो गया।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मोहम्मद हुसैन हैकल, अनुवादक, पृष्ठ156-157 मुद्रित बुक कॉर्नर जहलम)

हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

पृष्ठ 3 का शेष

फ़तह की खुशखबरी भेजी।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 265 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में यह वर्णन अभी आगे भी इंशा अल्लाह वर्णन होगा। इस वक़्त इतना ही बयान करता हूँ।

इस वक़्त में दो मरहूमीन का वर्णन भी करूँगा। जुमा की नमाज़ के बाद उनके जनाज़े पढ़ाऊंगा।

पहले साबरा बेगम साहिबा पत्नी रफ़ीक़ अहमद बट साहिब स्यालकोट हैं जो पिछले दिनों दिनों वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। मरहूमा के बारे में उनके बेटे ने लिखा है कि नमाज़ों की पाबंद, तहज्जुद गुज़ार, दुआ-गो, मेहमान नवाज़, ग़रीब पर्वर, नेक फ़ितल महिला थी। ख़िलाफ़त के साथ गहिरी वाबस्तगी थी और अक़ीदत का ताल्लुक़ था। बाक़ायदा एहतिमाम के साथ ख़ुतबात सुना करती थीं। वाक़फ़ीन-ए-ज़िंदगी का बहुत एहतिराम करती थीं। उनके बेटे नसीम बट साहिब काडूना (kaduna) नाईजीरिया में मुरब्बी सिलसिला हैं। मैदान-ए-अमल में होने की वजह से अपनी माता के जनाज़े और तदफ़ीन में शामिल नहीं हो सके थे इसलिए उनका जनाज़ा पढ़ा रहा हूँ। उनका सारा ख़ानदान ही, उनके पति भी और बाक़ी उनके बेटे, पोते जमाअत की ख़िदमत करने में पेश पेश हैं।

दूसरा जो वर्णन है वह जनाज़ा सुरय्या रशीद साहिबा का है। मरहूमा रशीद अहमद बाजवा साहिब की पत्नी थीं। 20 अप्रैल को उनकी कैनेडा में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह भी बड़ी नेक महिला थीं। तक़्वा शआर, दुआ-गो, ग़रीबपर्वर, मेहमान नवाज़, मिलनसार। अरसा तक उन्हें अपने मुहल्ला की सदर लजना के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। बच्चों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाने की भी उनको बहुत ज़्यादा तौफ़ीक़ मिली और फिर रब्वाह आ गईं जहां उन्होंने अपने बच्चों की तालीम-ओ-तर्बीयत की वजह से अपना सब कुछ बैच कर रब्वाह आकर अपना घर बनाया। मरहूमा मूसिया थीं। उनके भी एक बेटे सफ़ीर बाजवा साहिबर रब्वाह में मुरब्बी सिलसिला हैं। एक बेटी भी मुरब्बी सिलसिला की पत्नी हैं।

अल्लाह तआला इन दोनों से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों को और उनकी नसलों को भी इन नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 03 का शेष

कहता है, यह कहता है। जबकि इस्लाम की तालीम तो यह है। तो जितनी लिखने वालियाँ हैं उनको encourage करें कि सोशल मीडीया पर जो अलग topics आते हैं इन topics को ही लेना है ताकि attraction पैदा हो। अधिक से अधिक लोग पढ़ें और तवज्जा दें और आपकी तरफ़ तवज्जा हो। पश्चिम में महिलाओं के issues के ऊपर एतराज़ उठाया जाता है कि महिला को आज़ादी नहीं है, महिला को पर्दे की restrictions हैं, महिला को अमुक पाबंदी में रखा जाता है, महिला पर अमुक अत्याचार किया जाता है। इस पर महिलाओं को ही लिखना चाहिए कि तुम यह कहते हो। मैं एक महिला हूँ, मैंने ये ये ये लिखा है। यहां यू.के में भी लजना लिखती है और उसका अच्छा असर होता है। बजाय इसके कि मर्द उत्तर दें, महिलाएं उस का उत्तर दें तो अधिक अच्छा असर होता है। इसलिए अपनी एक टीम बनाएँ। इस का इलम भी आपको होना चाहिए। इस्लामी तालीम का इलम भी होना चाहिए और जब लिखें तो तैयारी करके बाक़ायदाfacts and figures के लिहाज़ से लिखना चाहिए ताकि अगले को impress भी कर सकें।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक मैंबर लजना ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि हॉलैंड में अभी बहुत कम मेम्बरात लजना ऐसी हैं जो independently अच्छा लिख सकती हैं, उस के लिए हम क्या कर सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : जो कम हैं उनको guide करें तो वे तो तैयार हो जाएँगी नाँ? जब एक टीम दो की, चार की, छः की, आठ की जितनी भी हैं वह तैयार हो जाएँगी तो उनको देख देख के फिर मज़ीद और भी तैयार होती रहेंगी। कम या अधिक का सवाल नहीं। काम करने वाला तो एक भी हो तो इन्क़िलाब आ जाता है। तो जब उत्तर देंगी तो ख़ुद ही लोग उत्तर लेने के लिए आपके पीछे पड़ेंगे। फिर आप मज़ीद उत्तर लिखना शुरू कर देंगी। और फिर दूसरों को भी encouragement हो जाएगी कि हम भी शामिल हों, हम भी लिखें। किसी भी चीज़ को करने के लिए या लोगों को उभारने के लिए कोई incentive होता है तो वह incentive यही है कि जब दो-चार के नाम अख़बारों में आएँगे तो बाकियों को भी शौक़ पैदा होगा कि हमारा भी नाम आए, हम भी लिखने की कोशिश करें। फिर आहिस्ता-आहिस्ता और बढ़ती जाएँगी।

प्रश्न : लजना इमाइल्लाह हॉलैंड की इसी 22 अगस्त 2020 ई. की virtual मुलाक़ात में एक मैंबर लजना ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत-ए-अक़्दस में अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला की ज़ात सत्तार है और बच्चों के रिश्ते करते वक़्त जब हम लड़का लड़की या उनके ख़ानदान के बारे में तहक़ीक़ करवाते हैं तो क्या यह ठीक है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह तआला सत्तार तो है और अल्लाह तआला सत्तारी को पसंद करता है। इस का मतलब यह है कि लोगों के ऐब यदि किसी को पता लग जाएं तो वे लोगों को बताने नहीं चाहिएं और पर्दापोशी करनी चाहिए। लेकिन रिश्ते के बारे में क़ुरआन-ए-करीम का यह भी आदेश है कि सच्ची बात से काम लो। जो भी रिश्ता है, लड़के और लड़की में जो भी नुक़्स हैं, बातें हैं उनका एक दूसरे को पता लगना चाहिए। बिल्कुल सच्चाई से काम लो, कोई ऐच पेच न हो ताकि बाद में रिश्ता में दराड़ें न पढ़ें। इसलिए हर बात खुल के बता देनी चाहिए। रिश्ते का मुआमला बड़ा sensitive मुआमला है। बाद में लड़ाईयां होती हैं, बातें होती हैं कि हमें यह नहीं बताया, वह नहीं बताया। तो इसलिए बेहतर है कि रिश्ता करते हुए यह सारी बातें बताओ और क़ुरआन-ए-करीम की निकाह की आयात जो हैं उनमें इसी लिए सच्ची बात के बारे में ज़ोर दिया गया है। सत्तारी का एक आदेश अपनी जगह है वह यह है कि तुमने किसी के ऐब ज़ाहिर नहीं करने। तुम जो रिश्ता बता रहे हो तो यह बता दो कि यह रिश्ता है। बाक़ी यदि आपको उसके बारे में कोई कमज़ोरी का पता भी है, जिस का रिश्ता तजवीज़ कर रहे हैं तो यह बता दें कि यह रिश्ता है तुम लोग ख़ुद ही आपस में बैठो, मिलो, देखो, दुआ करो और फिर फ़ैसला करो। यदि आपने सत्तारी करनी है तो यह है। न यह है कि रिश्ता बताने से पहले आप उसको यह कह दें कि इस में तो यह नुक़्स है, यह नुक़्स है, यह नुक़्स है और उस का रिश्ता ही न हो। कह दें यह रिश्ता है, तजवीज़ है। इस में अच्छाईयां क्या हैं, बुराईयां क्या हैं? यह तुम लोग ख़ुद मिल के बैठ के देखो और यदि तुम लोगों को पसंद आता है तो कर लो, फिर दुआ कर के फ़ैसला करो। असल चीज़ यह है कि अल्लाह तआला आलिमुलग़ैब है। और ग़ैब का इलम अल्लाह तआला को है कि कौन सा रिश्ता किस के लिए बेहतर है। इसलिए दुआ कर के फ़ैसला करना चाहिए। इसलिए अल्लाह तआला ने कहा है कि इस्तिख़ारा भी करना चाहिए। इस्तिख़ारा का मतलब ख़ैर माँगना है। अल्लाह तआला से ख़ैर मांगनी चाहिए कि इस रिश्ता में ख़ैर है तो मेरे लिए बेहतरी हो और आसानी से रस्ते खुल जाएं। और यदि इस रिश्ता में ख़ैर नहीं है तो इस रिश्ता में मेरे लिए रोक पड़ जाए। तो सत्तारी का मतलब यह भी नहीं है कि रिश्ता करते हुए जो हक़ायक़ हैं वे भी न बताए जाएं। यदि आपस में दोनों फ़रीक़ मिल बैठते हैं तो बेहतर यही है कि सच्ची बातों से काम लेते हुए आपस में जो भी अच्छाईयां बुराईयां हैं। एक दूसरे का पता लगना चाहिए। हर व्यक्ति perfect नहीं होता, हर एक में बुराईयां भी होती हैं अच्छाईयां भी होती हैं। यह भी मतलब नहीं है कि बुराईयों का ऐलान करते फिरो। लेकिन यदि कोई ऐसी बात हैं जिस से बाद में रिश्ता में दराड़ पड़ने का ख़तरा हो, टूटने का ख़तरा हो तो बेहतर है कि वे बुराई या वे बात पहले ही बता दो। कोई कमज़ोरी है, कोई बीमारी है, किसी लड़की में यदि औलाद पैदा करने की सलाहियत नहीं या किसी मर्द में कोई कमज़ोरी है तो वह पहले ही एक दूसरे को पता लग जानी चाहिए ताकि बाद में मसायल पैदा न हूँ।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी. एस लंदन)(धन्यवाद सहित अख़बार अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 9 अप्रैल 2021)

★ ★ ★

पृष्ठ 5 का शेष

इस एरिया में जहां हाल किराए पर लिया जाता है लोगों को मीना-बाज़ार में आने का दाअवत नामा देते हैं ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग आएं और ख़रीदारी करने के साथ-साथ जमाअत का परिचय बढ़े। मीना-बाज़ार तब्लीग़ का अच्छा माध्यम है। हम वहां पर तब्लीग़ कॉर्नर बनाते हैं। जहां हम पुस्तकें और दूसरा लिटरेचर रखते हैं। मीना बाज़ार में पर्दे की रियाइत के साथ लजना की मेम्बरात लीफ़ लेट्स तक़सीम करती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपने जो दावतनामा दिया है वह ठीक है कि ये लोग आपके मीना-बाज़ार में आएं। आपकी छोटी बच्चियां मीना-बाज़ार में जाएं और साथ लजना भी जाए जो उनकी राहनुमाई करे।

हुज़ूर अनवर ने सेक्रेटरी तब्लीग़ को हिदायत देते हुए फ़रमाया कि तब्लीग़ के लिए आप सैमीनार करें जो अहमदी विद्यार्थीयों कॉलेज और स्कूल में हैं वह अपने स्कूलों और कॉलिजों से सम्पर्क करें और सैमीनारज़ करें।

सेक्रेटरी तब्लीग़ ने कहा कि फ़ंड की कमी के कारण से हम नहीं करते। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अब तो मर्कज़ का शेयर भी आपको दे दिया है। साहब-ए-हैसियत लोगों से फ़ंड लें। अमरीका में एक स्टेट से दूसरी स्टेट जाने के लिए वह स्वयं ख़र्च करते हैं। जो अफोर्ड कर सकते हैं उनसे लें। जिनके शौहर अच्छे कमाने वाले हैं उन महिलाओं से लें।

सदर साहबा लजना ने कहा कि हुज़ूर अनवर ने इस वर्ष जो मर्कज़ का हिस्सा हमें अता फ़रमाया था उस से हमने पुस्तकें ख़रीदी हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगले पाँच वर्ष का बजट आप ही रख लें और उसे तब्लीग़ के कामों पर ख़र्च करें और तब्लीग़ के लिए नए रास्ते निकालें। तब्लीग़ी प्रोग्रामों के बारे में सेक्रेटरी तब्लीग़ ने बताया कि हमने विभिन्न स्कूलों को ख़त लिखे हैं और जमाअत ने Interfaith प्रोग्राम आयोजित किया था इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। ख़त लिखने से कुछ नहीं होगा, स्वयं घरों से निकलें, दूसरी दफ़ा जाएं बार-बार जाएं। अपनी लड़कियों से कहीं कि महिलाओं से अपने संबंध बनाएँ और अपने आपको परिचित करवाए। इंटर फ़ेथ प्रोग्राम तो जमाअत ने आयोजित किया था। लजना अपने तौर पर कुछ करें।

हुज़ूर अनवर के दरयाफ़त फ़रमाने पर सदर साहबा लजना ने बताया कि मस्जिद के उद्घाटन समारोह में 15 मेहमान लजना के माध्यम से शामिल हुए इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया लजना पर्दे में रह कर तब्लीग़ करे अपने खाविंदों से मश्वरा कर सकती हैं। तब्लीग़ की कमेटी बनाएँ। मंसूबे बनाएँ। मुझे लिख कर Approve करवाएं और फिर अनुकरण करें। पड़ोसियों से अच्छे संबंध बनाएँ

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। आपको अपने खाविंदों और बच्चों से ही फ़ुर्सत नहीं मिलती। तब्लीग़ भी ज़रूरी है और इसके साथ साथ तर्बीयत भी ज़रूरी है।

सदर लजना ने प्रश्न किया कि क्या हम तब्लीग़ के लिए स्टाल लगा कर पमफ़लेट लोगों को दे सकते हैं? क्या हम पर्दे में रह कर इस रंग में तब्लीग़ कर सकते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तब्लीग़ी स्टॉल लगाऐं। पुरुष तो स्टॉल लगाते हैं। आप भी पर्दे में रह कर लगा सकती हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जब मैं पार्लियामेंट गया तो वहां एक महिला ने पूछा कि आपकी महिलाओं को आज़ादी नहीं। तो आप स्टॉल लगा सकती हैं। आज़ादी के नाम पर कुछ तो बहुत आगे निकल जाती हैं। बीच का रास्ता इख़तियार करें। आज़ादी का ग़लत प्रयोग न करें

सेक्रेटरी इशात ने हुज़ूर अनवर की सेवा में "रिसाला मर्यम" और नैशनल सेलेब्स लजना इमाल्लाह प्रस्तुत किया। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। यह तो आपने पर्याप्त बड़ा बना दिया है। इस पर अनुकरण कितना होता है। रिसाला मर्यम के प्रकाशित के हवाले से हुज़ूर अनवर के पूछने पर सेक्रेटरी इशात ने बताया कि इस रिसाला को हम यू.के से ही छपवाते हैं क्योंकि आयरलैंड में इशात बहुत है।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि वाकिफ़ात नौ का रिसाला "मर्यम" भी मंगवाए और तक़सीम करें।

मज्लिस-ए-शूरा के आयोजित होना के हवाला से हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि लजना अपनी शूरा भी आयोजित करे जिसमें नैशनल आमिला के अतिरिक्त प्रत्येक दस मुम्बरात पर एक मेंबर का चुनाव कर लें।

सेक्रेटरी माल के बारे में हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया तो सदर साहबा लजना ने बताया कि सेक्रेटरी माल डाक्टर रूबीना साहबा बीमार हैं। परन्तु वह अपना काम अत्यधिक ज़िम्मेदारी के साथ अंजाम देती रही हैं। अब उनकी सेहत बहुत ख़राब हो चुकी है। इस पर हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई अब उनकी जगह कोई और सेक्रेटरी बनाएँ।

सदर साहबा ने लजना के कुछा की रक़म जमाअत के अकाऊंट में रखवाने के हवाला से कुछ मुश्किलात का वर्णन किया। इस पर हुज़ूर अनवर ने कुछ प्रशासनिक हिदायात से नवाज़ा। तथा फ़रमाया आमद-ओ-ख़र्च का ध्यान रखें। जिस तरह आपका बजट बनता है उसी तरह रखें।

सेक्रेटरी तर्बीयत साहिबा के इस पूछने पर कि हम लजना की तर्बीयत कैसे करें?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया पहले आमला अपनी इस्लाह करे। लोगों के पीछे न पड़ जाएं। बार-बार नसीहत करें। सब्र और हौसले से समझाएँ। प्रत्येक की अपनी अपनी नफ़सियात होती है उसके अनुसार इसे ट्रीट करें।

सेक्रेटरी तर्बीयत ने कहा कि फ़ैमिली मुलाक़ातों के इस तर्बीयती दृष्टि से कोई कमी नज़र आई है या कोई इस्लाह तलब अमर है तो हुज़ूर अनवर हमारी रहनुमाई फ़रमाएं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया लजना तो ठीक है उनको बच्चों की तर्बीयत की ज़्यादा फ़िक्र होती है।

हुज़ूर अनवर के दरयाफ़त फ़रमाने पर सदर साहबा लजना ने बताया कि यहां लजना की तजनीद 122 है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह संख्या तो एक मुहल्ला जितनी है। आपको उनको सँभालना मुश्किल हो रहा है।

सेक्रेटरी नास्रात ने बताया कि नास्रात की संख्या 31 है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अच्छी लजना देखनी है तो अच्छी नास्रात बनाएँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया नास्रात की क्लास में एक बच्ची ने पर्दे के बारे में प्रश्न किया था कि पर्दा करने की सही आयु क्या है। यदि आपने यात्रा अमरीका के इस पर्दा के बारे में भाषण सुने हैं तो उनमें मैंने तफ़सील से बताया है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। आप अपनी बच्चियों को छोटी आयु ही से हयादार कपड़ों पहनाए। ताकि वह उस की आदी हूँ। यदि पहले Sleevless और शॉर्ट कपड़े पहनाती रहें तो बाद में एक दम से हया नहीं आएगी। माओं को तर्बीयत करनी पड़ेगी। बचपन से ही सोच बनाएँ कि हमने हयादार कपड़े पहनाने हैं।

हुज़ूर अनवर ने अफ़्रीक़ा की महिलाओं की उदाहरण देते हुए फ़रमाया कि कुछ महिलाओं के पास कपड़े नहीं होते परन्तु अहमदियत स्वीकार करने के बाद वह अपने आपको ढाँपती हैं और यहां आकर तो वह पूरे कपड़े पहनती हैं परन्तु पाकिस्तानी महिलाए जब वहां से आती हैं तो बुर्क़ा पहना होता है और यहां यूरोप में आकर बेपर्दा हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने सेक्रेटरी शिक्षा से संबोधित हो कर फ़रमाया। आप अपनी फ़ैमिली में अकेली अहमदी हैं तो आपके माता पिता के जमाअत के बारे में क्या विचार है और आपके पिता को जुमा पर भी देखा। उन्होंने ख़ुतबा जुमा भी सुना। इस बारे में वह क्या कहते हैं।

इस पर सेक्रेटरी शिक्षा ने बताया कि मेरे माता पिता जमाअत के बारे में बहुत अच्छे विचार रखते हैं और वह प्रत्येक जुमा को हुज़ूर अनवर का ख़ुतबा सुनने का एहतिमाम करते हैं और कई दफ़ा मिशन हाऊस आकर नमाज़-ए-जुमा अदा करते हैं और इसके अतिरिक्त M.T.A पर जलसे देखते हैं और तक़ारीर सुनते हैं और स्थानीय जलसों में भी शामिल होते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। आप उनको अहमदियत में शामिल करें आपकी माता तो संतुष्ट हैं। बस पिता साहब को क़ायल करें। इस पर सेक्रेटरी शिक्षा ने बताया कि माता पिता पर फ़ैमिली का प्रैशर है और बड़ा भाई भी जमाअत का विरोध करता है। अभी उसकी शादी नहीं हुई। दुआ की दरख़ास्त है अल्लाह तआला मेरे भाई पर फ़ज़ल करे और उनकी रहनुमाई करे तो माता पिता अहमदियत की ओर आ जाऐंगे।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने एक आइरिश मित्र का वर्णन फ़रमाया कि वह मस्जिद के उद्घाटन के इस साऊँड सिस्टम के सम्बन्ध में डयूटी कर रहा था। दो तीन दिनों में यहां के माहौल और हुज़ूर अनवर की मौजूदगी से बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा कि वह पिछले 35 वर्षों से ख़ुदा की तलाश में था। उसे चर्च में तो ख़ुदा नहीं मिला परन्तु यहां ख़लीफ़ा को नमाज़ें पढ़ाते देखा, ख़ुतबा जुमा सुना और साथ नमाज़ें पढ़ीं तो मुझे यहां ख़ुदा मिल गया है।

इसके बाद मुआविन सदर बराए वाकिफ़ात-ए- नौ ने बताया कि उनकी फ़ैमिली ने भी बैअत करके जमाअत अहमदिया में शमूलियत की है और उनको भी अपने ख़ानदान से पर्याप्त विरोध का सामना है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। विरोध से आपके गुनाह ही झड़ते हैं।

सेक्रेटरी सेहत व् जस्मानी के इस प्रश्न पर कि क्या हम लजना का ग्रुप मिलकर Walk कर सकते हैं इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पूछने पर फ़रमाया कि मैराथन वाक में जाना है? जिस पर सेक्रेटरी ने कहा कि आम वाक पर्दे में रह कर कर सकते हैं। तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हाँ पार्क में ही जाना है

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 09 June 2022 Issue No.23

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

तो कोई हर्ज नहीं।

नैशनल मज्लिस-ए-आमला लजना इमाल्लाह आयरलैंड की हुज़ूर अनवर के साथ यह मीटिंग साढ़े आठ बजे तक जारी रही। मीटिंग के अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक आमिला की समस्त मेम्बरात को अलेसल्लाह की अँगूठियां प्रदान फ़रमाइं और मेम्बरात ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाने का सौभाग्य पाया।

समारोह

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार निमंलिखित 8 बच्चियों की आमीन का समारोह हुआ। प्रिय अफ़्शां कामरान, फ़ायज़ा, मक़बूल, आयशा ईमान, सालेहा असद, शेनाज़ा अहमद, मलायका ताहिर, हिब्बतुलस्सलाम, कायनात अख़तर

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने प्रेम पूर्वक प्रत्येक बच्ची से क़ुरआन-ए-करीम की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ कराई।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ "मस्जिद मर्यम" जाने के लिए जब होटल से बाहर पधारे तो होटल की Lobby में तीन आइरिश महिलाए खड़ी थीं जो यहां होटल में एक आर्गेनाईज़ेशन की ओर से किसी कान्फ्रैंस में शामिल होने के लिए आई थी। उन्होंने मुंतज़ेमीन को बताया कि उन्होंने ख़लीफतुल मसीह को टेलीविज़न पर देखा हुआ है। वह ख़लीफतुल मसीह से मिलना चाहती हैं। इस लिए उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक उनसे बातचीत फ़रमाई। इसके बाद उन्होंने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद मर्यम" में पधार कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की इस ज़मीन पर पहले से उपस्थित मकान का निरीक्षण फ़रमाया। इस मकान को Renovate किया गया है। और इस में एक इंडस्ट्रीयल किचन, स्टोर, खाने का हाल और रिहायशी हिस्सा बनाया गया है। हाल के अंदर लाइब्रेरी के लिए पुस्तकें भी रखी गई हैं।

निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस होटल तशरीफ़ ले आए और अपने रिहायशी अपार्टमंट में तशरीफ़ ले गए।

(शेष आगे)

(उद्धरित अख़बार बदर उर्दू 30 अक्तूबर 2014)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यद-हुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

चीज़ है। इन्सान का अंत कर देती है। इससे बढ़कर झूठ का ख़तरनाक नतीजा क्या होगा कि इन्सान ख़ुदा तआला के मुर्सलों और उसकी आयतों की तक़ज़ीब करके दंड का अधिकारी हो जाता है। अतः सच्च बोला करो।

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 333, मुद्रित 2018 क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

इन्सानी से ताल्लुक़ रखते हैं। क़ुरआन-ए-करीम के नुज़ूल के ज़माना के बाद तो यूरोप ने साईंस में बे-इंतिहा कमाल हासिल किया है परन्तु अब तक इन्सानी जिस्म के सम्बन्ध में पूरा अहाता नहीं कर सका। फिर इस क़दर बड़े कानूनों पर जिस वजूद की बुनियाद रखी गई है उसकी पैदाइश के मक़सद को इस क़दर तुच्छ बताना जैसा कि क़यामत के मुनकिर बताते हैं किस तरह उचित समझा जा सकता है।

इसी तरह यह निज़ाम अम्बिया की कामयाबी और उनके दुश्मनों की तबाही पर भी दलालत करता है। ज़मीन को आसमान से जुदा कर दो फिर उसकी क्या हालत हो जाती है, एक दिन भी नहीं ठहर सकती। अतः जो लोग यह ख़्याल करते हैं कि रुहानी आसमान से सम्बन्ध विच्छेद करके बचे रहेंगे कैसे अंधे हैं। जिस तरह इस निज़ाम-ए-कामिल का अंग रहते हुए ही ज़मीन महफ़ूज़ रह सकता है इसी तरह रुहानी निज़ाम का अंग बनने से ही इन्सान हलाकत से बच सकता है अन्यथा इस के बचने की कोई सूरत नहीं विशेषता जबकि वह इस निज़ाम पर हमला-आवर हो तो उसकी निजात पूर्णता सम्भव है। अतः नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुनकिरों को बताया गया है कि आसमान-ए-रुहानी से सम्बन्ध विच्छेद कर लेने की वजह से उनके सामान किसी काम भी न आएँगे बल्कि अब उनकी तबाही और मुस्लमानों की तरक़्क़ी का वक़्त आ पहुंचा है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 107 मुद्रित क़ादियान)

★ ★ ★

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निमार्ण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad